राज्यका घोर संग्राम होनेका अवसर आगयाथा परंतु इसका निपटारा विदेशी राज्योंकी पंचायतको सौंपागया इस कारण युद्ध होनेकी अनी टलगई ॥

अध्याय ३१.

युद्धके विषयमें सम्मतिऔर स्वेज़की नहर ।

सन् १८६८ई० में युद्धके विषयमें नवीन नियम स्थिर करनेका यूरोप वालोंने प्रयत्न किया था । इस वर्षके नवंबर मासमें रूसकी राजधानी सेंट पीटर्स बर्गमें बेवेरिया, बेलजियम, डेनमार्क, इंग्लैंड, फ्रांस, यूनान, हालैंड, इटाली, ईरान, पुर्तगाल, आस्ट्रिया, प्रूशिया, रूस, स्वीडन, स्विठजरलैंड, रूम और बटेम्बर्ग राज्योंके प्रतिनिधियोंने मिलकर निम्न लिखित संधि पत्रपर हस्ताक्षर किये:—" संशोधन और उन्नतिपर ध्यान देकर युद्धमें उत्पन्न दुःखोंकी कठोरता कम करनेके जहांतक होसकै प्रयत्न करना चाहिये । युद्धका मुख्य प्रयोजन शत्रुको निर्बल करनेका है इस कार्यके लिये यही बात बहुत है कि शत्रुके जितने मनुष्य युद्धमें अशक्त किये जायँ उन्हें शक्तिहीन करना परंतु जिन उपायोंसे उनके घाव अनावश्यक बड़े हों अथवा उनकी मृत्युहो ऐसे उपाय इस नियमके प्रतिकूल हैं और मनुष्यत्वके नियमके भी विरुद्ध है । इस कारण नीचे हस्ताक्षर करने वाले अपने२ राज्योंकी ओरसे आधिकार प्राप्तकर स्वीकार करते हैं कि (१) इस लेख पर हस्ताक्षर करनेवाले स्वीकार करते हैं कि उनके मध्यमें युद्ध होनेपर जल उठने वाले अथवा जिनसे आग लगउठे ऐसे पदार्थ काममें न लायेंगे । इस नियमका जल और स्थल दोनों सेनाओंमें वर्त्ताव होगा (२) इस कमीशनमें जिन २ राज्योंके प्रतिनिधि इकट्ठे नहीं हुए हैं उनको भी निमन्त्रण दिया जाय (३) जबकभी इस लेख पर हस्ताक्षर करनेवालोंमेंसे परस्पर युद्धका अवसर आवैगा इसका वर्त्ताव होगा किन्तु जो अक्षर नहीं करैगा उसको वाधित नहीं किया जायगा (४) जबकभी विद्याकी वृद्धिके साथ युद्धकी सामग्री सुधारनेकी आवश्यकताहो तब उसका प्रचार करने पूर्व सबको मिलकर विचार करना चाहिये कि यह नवीन पदार्थ मनुष्यत्वके अनुकूल और युद्धकी आवश्यकताके अनुसार है वा नहीं ।" इन शर्तोंका वर्त्ताव कुछभी न हुआ और रूसके ज़ार निकोलस के प्रयत्नसे सन् ९८ में हेग् स्थानमें सब राज्योंके प्रतिनिधियोंकी सभा हुई थी उसमें जो नियम स्थिर हुए थे उनका भी वर्त्ताव नहीं हुआ ॥

स्वेज़की नहर तैयार करनेका काम सन् १८६९ ई० की १७ नवम्बरको फ्रांसकी पदच्युत रानी यूजिनी, आस्ट्रियाके सम्राट् फ्रांसिस जोजेफ और जर्मनी के युवराज (स्वर्गवासी सम्राट्) फ्रेडरिकके समक्ष आरम्भ हुआ था। इस नहर की योजना करनेवाला फरांसीसी इंजिनियर डीलेसेयस था। जिस समय इसने अपने विचार प्रकट किये यूरोपके बड़े २ इंजिनियरोंने उसकी हँसीकी थी। उनका कथन था कि भूमध्यसागर और लालसमुद्रकी सतह बराबर नहींहै इस लिये नहर यदि बनाई जायगी तो उसका टिकाव न होसकैगा। परंतु इसने इनके आक्षेपोंपर कुछ ध्यान न दिया और अन्तमें इसका उद्योग सफल होगया। चार वर्षके कठिन परिश्रमसे यह नहर तैयार हुई थी। इसके बननेसे भारत के व्यापार की बहुत उन्नति हुई। इसका लेखा यह है:-

	भारतमें माल आया.	भारतसे माल गया.
	रुपया	रुपया
नहर तैयार होने से पहले सन् १७८२	९०९४६१६४	५४५४७७१५
„ के प्रथम वर्षमें सन् १८७३	१०५५११११३८	६०३९९९९६
सन् १८७७	१४५६७६४८१	९२००९८८१
सन् १८८७	२१४९९५८३३	१७२८६९५५६
सन् १८९७	२८४४८१५१६	३०६९५७५७०

अध्याय ३२.

काबुलके अमीरका अंबालेमें सत्कार।

सन् १८६८-६९ ई० में भारतके इतिहासमें एक विशेष घटना हुई। अमीर दोस्त मुहम्मदकी मृत्युसे अफगानिस्थानमें जो बखेड़े खड़े हुएथे उन्हें अमीर शेर अलीने दबा दिया। इस समय अमीरसे भारत गवर्नमेंटकी मित्रता बढ़नेका अवसर आया। इस वर्षके अगस्तमें अमीर शेर अलीने पंज शहरमें अज़ीमखांको विजय कर भारत गवर्नमेंटसे मित्रता बढ़ानेके लिये वाइसराय सर जान लारेंस के नाम पत्र लिख भेंट करनेकी इच्छा प्रकाशितकी। और लिखाकि "यदि आवश्यकता होगी तो मैं ठेठ कलकत्ते तक आनेको तैयार हूं। और मुझे रुपये तथा शस्त्र संबंधी सहायता देनेसे मैं सरकारका बड़ा उपकार मानूंगा।" यह बात

वाइसरायने स्वीकार करी परंतु अज़ीमखां और अबदुल रहमानखां के काबुलके उत्तर भाग पर चढ़ाई करनेसे उस समय भेंट न होसकी। वाइसरायने प्रसन्न होकर अमीरके पास छः लाख रुपये भेज दिये । इस द्रव्यसे उसने सेना का चढ़ा हुआ वेतन चुका दिया। ४ जनवरी सन् १८६९ई० को अजीमखां और अबदुल रहमानखां की हारहुई। दोनों भागकर भारत वर्षमें आये परंतु यहां उनको शरण न मिली इस लिये दोनों ईरान चलेगये। वहां जाकर अज़ीमखां मरगया॥

इस अवसरमें गवर्नर जनरल सर जान लारेंसने अमीर शेर अलीको एक पत्र लिखकर मित्रताकी वृद्धिके लिये उनसे मिलनेकी इच्छा प्रकटकी और लिखा कि पहले छः लाख रुपये भारत गवर्नमेंटने भेजेथे उनके सिवाय छः लाख और भेजेजायँगे। और इसके बदले में उनसे केवल सत्य मित्रता चाही। उन्होंने श्रीमतीकी आज्ञा लेकर काबुलके साथ नवीन नीति स्थिर करनेके लिये शस्त्र और रुपया देनेका निश्चय किया था। इसबातसे प्रसन्न होकर अमीरने वाइसराय से मिलनेकी इच्छा प्रकटकी। वाइसरायने इसबातको सहर्ष स्वीकार किया और ३ मार्च सन्१८६९ ई० को अमीर शेरअली अपने पुत्र अबदुल्ला सहित ब्रिटिश सीमामें प्रविष्ट हुए। और अपने साथियोंको पेशावर छोड़कर वह स्वयं लाहोरमें लेफ्टिनेंट गवर्नरसे जा मिले। वहां पांचदिनतक लेफिनेंटगवर्नरने उनका आतिथ्य सत्कार किया फिर वह २६ मार्चको अंबालेमें पहुँचे। दूसरे दिन भारतके वाइसराय लार्डलारेंससे भेंट हुई। उन्होंने एक बहुतबड़े दबदबेवाले दरबारमें अमीरकी भेंटकी और आठदिन तक अपने यहां उन्हें मेहमान रखकर उनको सेनाकी कवाइद और तरह २ के तमाशे दिखलाये। जो २ उन्नतियां प्रथम बार उनकी भारतमें दृष्टिपड़ी थी उनसे बहुत चकित हुए। २१ अपरेलको ब्रिटिश राज्यसे निकलकर काबुलगये और वहां जाकर उन्होंने अनेक प्रकारके संशोधन किए॥

अध्याय ३३.

भारतमें ड्यूकआफएडिनबरा और नवीन संशोधन ।

सन् १८६९–७० ई० में भारत वर्ष में दूसरी आवश्यक बात श्रीमतीके द्वितीय पुत्र श्रीमान् ड्यूक आफ एडिनबराके पधारने में हुई। भारत गवर्नमेंटकी ओरसे इनके शुभागमनके विषयमें जो पार्लियामेंटको रिपोर्ट कीगई उसमें लिखा

है कि–" श्रीमान् डयूक आफ एडिनबराकी भारत यात्रासे दो लाभ हुएहैं। प्रथम यह कि इंग्लैंडके राजकुटुम्बके एक रत्नने भारत साम्राज्यमें प्रथमहीबार आगमन किया था और दूसरे यह कि श्रीमतीके पुत्रका आतिथ्य करनेके लिये भारतकी प्रजाने और देशी राजाओंने बहुतही हर्ष पूर्वक उनका सत्कार किया था। कितनेही राजाओंने अपनी हार्दिक भक्ति के प्रमाणमें इनके आगमनका स्मारक चिरस्मरणीय रखनेके लिये पाठशालायें स्थापितकी और शिक्षाकी उन्नतिके लिये छात्रवृत्तियां नियतकी थी" ॥

भारत वर्ष के वाइसराय लार्डमेओंने सन् १८७२ई०सं सरकारी भूमि करके विषयमें नियमोंका परिवर्तन कर पार्लियामेंट को लिखाथा कि–" प्रान्तीय गवर्नमेंटको उनके अधिकृत विभागोंपर स्वतंत्रतासे शासन करने दियाजाय। और उनके निर्वाहके लिये साम्राज्यके भूमिकरमेंसे अमुक द्रव्य प्रातिवर्ष दियाजाया करै और उनको जेल, रजिस्टरी, शिक्षा विभाग, चिकित्सा, छापाखाना, सड़क, पबलिक् वर्क्स और फुटकर विभागोंका अधिकार दियाजाय। इन विभागोके निर्वाहके लिये अवधको २०६९४८०) मध्यप्रान्तको २६१२६३०) ब्रह्मदेशको २७५३३२०) बंगालको ११६८५९२०) पश्चिमोत्तर प्रदेशको ६४०७९२०) पंजाबको ५१६२२१०) मदरासको ७३९४८८०) और बंबईको ८८०००७५०) कुल ४६८८७११०) रुपया वार्षिक दियाजाय। सन ७०–७१ ई० में इन विभागोंके लिये जितना व्यय गिना गया था उसके प्रमाणसे यह द्रव्य कम है और घटाये हुए द्रव्यका जोड ३५००००००) को पहुँचता है। इस घटीको पूर्ण करनेके लिये उनको स्वतंत्रता दी जाती है। इसके लिये वे प्रान्तीयकर डालना चाहै तो डाल सकती है "॥

सन् १८७०–७१ ई०में भारत गवर्नमेंटने कितनेही नवीन आईन बनाये थे। उनमे दो मुख्यहैं। एक यह कि सिविल सर्विसके बड़े २ पदोंपर विनापरीक्षाके देशियोंको भरती करलेनेकी भारत गवर्नमेंटको स्वतंत्रताहै। दूसरा यहथा कि आवश्यकता पड़नेपर गंभीर विषयोंमें गवर्नरजनरल अपनी कौंसिलके बहुमतका कुछ विचार न कर अपनी इच्छासे काम करसकैगा। इनमेंसे प्रथम नियम बहुत वर्षोंके बाद प्रचलित हुआ। और इसके अनुसार जिन लोगोंको नियत किया गया उनकी योग्यताकी अच्छीतरह जाँच नहीं कीगई और प्रजाने इस बातको पसंद किया तो बहुत वर्षोंसे यह नियम बिलकुल बंद कर दिया गया ॥

अध्याय ३४.

फ्रांस और जर्मनीका संग्राम ।

इसी वर्षमें फ्रांससे जर्मनीका लोमहर्षण संग्राम हुआ । स्पेनकी प्रजाने प्रूशिया (जर्मनी)के राजा प्रथम विलियमके एक संबंधीको अपना राजा बनाना पसंद किया। इसपर फ्रांसके सम्राट्ने प्रतिवाद किया । जर्मन नरेशने उनको प्रसन्न करनेके लिये अपने संबंधीको समझा बुझाकर उससे स्पेनकी गादी की उम्मेद वारी छुड़वादी। इस प्रयत्नसे फ्रांस नरेशका प्रजामें पूर्ण आदर होना चाहिये था परंतु उन्होंने मैक्सिको पर सेना भेजकर हार खाईथी इस लिये प्रजा उनसे अप्रसन्न थी और इसी कारणसे वह चाहतेथे कि किसी भारी युद्धमें विजय पाकर प्रजाका मनोरंजन किया जाय । इस विचारसे उन्होंने जर्मन नरेशसे कहलवाया कि आप सदाके लिये इस बातको स्वीकार करलें कि हमारा कोई भी संबंधी स्पेनकी गादीकी उम्मेदवारी न करैगा । यह बात अपमान सूचक थी । प्रूशियाके प्रधान अमात्य प्रिंस बिस्मार्कको यह बात अपनी इच्छाके अनुसार मिलगई । फ्रांसके सम्राट्का स्वास्थ्य कुछ कालसे बिगड़ गया था । राज्य प्रबंधकी बातोंमें वह पूरा २ ध्यान नहीं दे सकते थे । उनकी सेना और युद्धविभाग अभिमान और अपनी उत्तमताके मिथ्या विचारमें चूर हो रहे थे । इस कारणसे सेनाका प्रबंध बिगड़ रहा था और युद्धकी कोई सामग्री तैयार न थी । फ्रांसके युद्धकी घोषणा देनेके अनंतर उसकी सेना धीरे २ चलकर युद्ध क्षेत्रमें पहुंची । सीमाका उल्लंघन करतेही फ्रेंच सेना अकस्मात् रुक गई । जर्मनीकी युद्धपटु सेना पानीके बाढ़की तरह एक दमसे फरांसीसी सेनापर आ टूटी । एकही दिनके युद्धमें परिणाम मालूम होगया । फरांसीसी सेना एकके बाद दूसरी दूसरीके अनंतर तीसरी इसी तरह लड़ाई हारती गई । फ्रांसके सम्राट्का राजधानीको लौटनेका साहस न हुआ । जर्मनी वालोंके आक्रमणसे देशकी रक्षा करनेके बदले सम्राट्के बचावपर फरांसीसी सेनाने विशेष ध्यान दिया और इस कारण सैदनके मैदानमें फ्रांसवालोंने जर्मनीसे अंतिम हार खाई । फरांसीसी गवर्नमेंट टूटगई । सम्राट्ने शस्त्र डालकर शत्रुकी शरण ली । जर्मन सेनाने फरांसीसी सम्राट्को कैदकर लिया । रानी भागकर इंग्लैंड चली गई । फ्रांसकी प्रजाने राज्यमें प्रजातंत्र प्रणाली स्थापितकर अमुक वर्षके लिये प्रजा वर्गमेंसे राजा (सभापति) चुननेका अधिकार ग्रहण किया । और उसी वर्षकी १८ जनवरीको प्रूशियाके राजा विलियमने पैरिसके

निकट ब्रुसेलसके महलमें जर्मनीके सम्राट्का पद ग्रहण किया। युद्धके बदलेमें आलसस और लारेंसके दो परगने और २० करोड़ पौंड जर्मनीने फ्रांससे दंड लिया। युद्धके आरंभमें अंगरेज़ प्रजा जर्मनवालोंके पक्षमें थी परंतु जब जर्मन वालोंने फ्रांससे दंडमें बड़ी कठोरताकी तो उसके विचार विरुद्ध होगये। फ्रांस और जर्मनीके विषयमें जिस समय ख़बरोंके घोड़े दौड़ रहे थे एकाएक ऐसी बात सुननेमें आई कि कितनी ही शर्तोंके साथ जर्मनी बेलजियम राज्यको फ्रांसमें मिला देनाचाहती है। इस बातसे इंग्लैंडको बहुत क्रोध आया और उसने दोनोंको दबाकर एक ऐसी संधिपर हस्ताक्षर करालिये जिसके अनुसार बेलजियम राज्यकी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिये तीनों राज्योंको अपने ऊपर बोझा उठाना पड़ा। फ्रांस जैसे बलाढ्य राज्यको परास्त करनेमें जर्मनीका हौसला बढ़ता देखकर इंग्लैंडके कितनेही लोग कहने लगे थे कि अपने सम्मानकी रक्षाके लिये हमें किसी बड़े राज्यसे युद्ध करना चाहिये। इंगलैंडने बुद्धिकौशलसे दो राज्योंको दबाकर विना लड़े भिड़े अपना दबदबा बढ़ा लिया॥

अध्याय ३८.

लार्ड मेओका खून और मध्यएशियामें रूस।

सन् १८७२ ई० की फरवरी को भारतवर्षके लिये एक बहुतही शोकजनक घटना हुई। यहांके वाइसराय और गवर्नर जनरल लार्ड मेओ अंडमन टापूके पोर्ट ब्लेर स्थानके क़ैदियोंको देखनेके लिये गयेथे। वहांपर एक अफ़ग़ानने ८ फरवरीको उनपर आक्रमणकिया। अपराधी श्रीमान्को एक प्रार्थना पत्रदेना चाहता था परंतु नियमके अनुसार उस अर्जीको सुपरिंटेंडेंट द्वाराभेजनेकी आज्ञादेकर श्रीमान्ने उसे ग्रहण न किया। इसबातसे उसदुष्टको क्रोध भरआया और अवसर पाकर उसनें श्रीमान्के प्राण लेडाले। इस घटनासे भारतभरमें शोक हुआ। यद्यपि यह कंसर्वेटिव पक्षके गिने जाते थे परंतु इनके विचार बहुत उदार और प्रजापर विश्वास उत्पन्न करनेवाले थे। इनकी मृत्युसे भारतवर्षने एक योग्य वाइसरायको खोदिया॥

इसीवर्षमें रूसकी शनैः २ मध्यएशियोंमें वृद्धि देखकर इंग्लैंडमें चिन्ताका आरंभ हुआ। पूर्व तुर्किस्तानमें एक मुसलमान राजासे मेल बढ़ाकर उसने व्यापार के विषयकी एक संधिद्वारा २० हज़ार वर्ग मील भूमिका कुलजा नामक जिला उससे लेलिया। इसीतरह रूस और पूर्वकी ओरके उपनिवेशके मध्यमें

रेल्वेकी दोहरी लाइन बनवानेका भी रूसने प्रबंध किया। इतने पर ही उसे संतोष न हुआ । उसने खीवा राज्यपर भी दृष्टि डालना आरंभ करदिया । वहांके खानने कितने ही रूसी व्यापारियोंको मारडाला था। और रूसके थोड़े से प्रदेशपर आक्रमण भी कियाथा । इस कारणसे रूसने खीवाको घर दबाया। खीवाके खानको दबकर २० लाख रुबल दंड देना स्वीकार करनापड़ा। जबतक दंडका द्रव्य न चुकजाय खीवाराज्यके शुराहान और कुनग्राड दो जिलोमें रूसी सेनाका खीवाके खर्चसे रहना निश्चय हुआ। इसके सिवाय खीवाकी सीमा आमू दर्या (आक्सस) तक स्थिर हुई और नदीके दहने किनारेका भूभाग रूसने बुखाराके अमीरको दिलवादिया क्योंकि इस युद्धमें अमीरने उसकी बहुत कुछ सहायताकी थी। रूसकी इच्छासे खीवाराज्यने दास व्यापार बिलकुल उठादिया । इसके बाद खीवाके पड़ोसमें लुटेरे तुर्कोंपर रूसकी दृष्टि पड़ी।खीवाका बल बढाने के नामपर उसने तुर्कोंको दमन करने का निश्चय किया। इसविचारमें शीघ्रही सफलता प्राप्तकर रूसने खीवाके साथ दूसरा संधिपत्र किया। आमू और सीर नदीका मध्यभाग रूसी राज्यमें मिलादेने और सीरके दहने किनारेपर किलोंकी माला बनाने का उसने स्वत्व प्राप्तकिया। इसके सिवाय उसने खानसे स्वीकार करा लिया कि मैं रूसके अधीन रहूंगा और बिना उसकी आज्ञाके किसीसे संधि विग्रह न करूंगा। इस घटनासे इंग्लैंडमें कुछ २ घबराहट मचगई । इंग्लैड और रूसमें इस विषयकी बहुत समयतक लिखा पढ़ी होती रही। उसका परिणाम यह हुआ कि काबुल और रूसकी सीमा इसतरह निर्द्धारित कीगई। (१) बदखशा और उसके अधीन वा खान प्रदेश जो पूर्वमें सटीकल (उड्सलेक) से आक्सस और कोकचा नदीके संगमतक चलागयाहै उसे अफगानिस्तानकी सीमा समझनी(२) अफगान तुर्किस्तान जिसमें कुंजह और बलखतक आगये हैं उसकी उत्तर सीमा आक्सस और कोकचा नदीके संगमसे खोजा सालेहतक गिनना और खोजा सालेहके नीचे आक्सस नदीके बांये किनारे वाले प्रदेशपर काबुलके अमीरको दावा न करना और (३) अक्सा, सेरीपुल, माइमें जान, शिबर जान और अंडकोईके ज़िले अफगानिस्तानकी पश्चिमोत्तर सीमा गिने जाना चाहिये इनसे उत्तरके जंगल तुर्क मानों क हैं ॥

अध्याय २६.

बंगालका दुर्भिक्ष और लार्ड नार्थब्रूककी कीर्त्ति ।

सन् १८७३–७४ ई० में बंगाल प्रान्तमें घोर अकाल पड़ा । इस समय वहांके लेफ्टिनेंट गवर्नर सर ज्यार्ज केम्पबेल थे । उन्होंने सम्मतिदी कि भारतसे बाहर अन्नका जाना बंद करना, अकालपीडित भागोंमें बाहरसे अन्न लाना, होसके जहां २ अन्नका संग्रहकरना सशक्तोंको काम कराकर और अशक्तोंको बिना काम भोजनदेना चाहिये। वाइसराय लार्ड नार्थब्रूक अकालकी ख़बर पातेही दौड़े हुए शिमलेसे कलकत्ते पहुंचे। अन्नका निकासबंद करनेके विषयमें सर ज्यार्ज केम्पवेलने जो सम्मतिदी थी उसका देशी समाचार पत्रोंने समर्थन किया परंतु यह बात लार्ड नार्थ ब्रूकको पसंद न हुई । उन्हों ने कहाकि हमारे साधारण ग्राहकोंको मनमानते भावपर अन्नदेनेकी यदि हमइस समय नाहींकरेंगे तो वे अपने लाभके लिये और कोई मार्ग लेंगे और इससे भविष्यतमें हमारे व्यापारको हानिपहुं- चैगी। इस सम्मतिपर भारतके प्रसिद्ध संवादपत्रऔर लंडन टाइम्सने विरोध किया। परंतु उससमय भारतके स्टेटसेक्रेटरी लार्डसालिस्बरी थे। उन्होंने लार्डनार्थ ब्रूकके कथनका समर्थन किया और इसीके अनुसार कार्य किया गया। सर ज्यार्ज के- म्पबेलकी दूसरी सूचनाको वाइसरायने पसंद किया और इसके लिये अकाल पीडितोंकी सहायताके हेतुसे भारत गवर्नमेंटने ५ लाख टन चाँवल खरीद किये । इन चावलोंको अकाल पीडित भागोंमें ले जानेके लिये १ लाख छकड़े, २ लाख बैल, २ हज़ार ऊंट, २३०० नावें और ९ स्टीमरोंसे काम लिया गया । अकाल पीडितोंकी रक्षाके लिये जो काम खोले गये उनमें काम वा बिना काम भोजन पाने वालोंकी संख्या फरवरी मासमें २८७००० थी किन्तु जूनमें वही बढ़कर १७ लाख ७० हज़ारको पहुंची । इस अकालके लिये गवर्नमेंटका अनुमानसे ६॥ करोड़ रुपया व्यय हुआ । अकाल पीडितोंको अन्न पहुंचानेमें गवर्नमेंटने किसी तरहकी त्रुटि न रक्खी । इस बातका प्रमाण यही है कि सर- कारके मँगाये हुए अन्नमेंसे अकालके अंतमें १ लाख टन चाँवल बच रहे । इग्लैंडकी प्रजाने भारतवर्षके अकाल फंडमें उस समय अनुमान २० लाख रुपया दिया ॥

अध्याय ३७.

बड़ौदेके गायकवाड़का पदच्युत होना ।

सन् १८७४ ई० में बड़ौदाके गायकवाड़ महाराजा मलहार राव गादीसे उतार दिये गये । उनपर मुख्य अपराध यही लगाया गया था कि उन्होंने बड़ौदेके रेज़िडेंट कर्नल फेरको मरवा डालनेका प्रयत्न किया । इस प्रयत्नका कारण यह बतलाया गया कि लक्ष्मी बाई नामकी एक रूपवती स्त्री को उन्होंने उसके पतिसे छीन कर अपनी रानी बना लिया । उस स्त्रीके जो पुत्र हुआ उसे अपना उत्तराधिकारी बनानेका मलहार रावने निश्चय किया । परंतु "लक्ष्मी बाईका पहला पति जीवित था इसलिये उस बालकका गादीपर स्वत्व नहीं है" यह बात कहकर कर्नल फेरने उनकी योजना स्वीकार न की । कर्नल फेर नित्य प्रातःकाल वायुसेवनसे लोटकर एक प्याला शरबत पिया करतेथे । एक दिन साहबके बटलरने किसीके सिखानेसे उस प्यालेमें संखिया और हीरेका चूर्ण डाल दिया । इसमें महाराजाका संबंध मानकर एक कमीशन द्वारा उनके अपराधकी जांच की गई । इस कमीशनमें सर रिचर्ड काउच सर रिचर्ड मीड मिस्टर फिलिप मेलविल, ग्वालियर और जयपुरके नरेश तथा ग्वालियरके दीवान राजा सर दिनकर राव नियत हुए । महाराजने अपनी रक्षाके लिये विलायतके सुप्रसिद्ध बेरिस्टर सार्जंट बेलंटाइनको बुलाया । २३ फरवरीसे १८ मार्च तक जाँच हुई । कमीशनके तीनों अंगरेज़ सभासदोंने महाराजा को दोषी और देशी सभासदोंने निर्दोष सिद्ध किया । लार्ड नार्थब्रूकने अंगरेजोंके कथनको विश्वासनीय मानकर महाराज मलहार रावको पदच्युत किया । इसके साथही उन्होंने एक आज्ञापत्र प्रकाशित कर उसमें लिखा कि "महाराज मलहार रावके वारिसोंका गादीपर कुछ स्वत्व नहीं रहैगा किन्तु प्राचीन सन्धिके अनुसार बड़ौदा राज्य स्थिर रक्खा जायगा ।" गत महाराज खंडेरावकी बिधवा रानी उस समय विद्यमान थीं । उन्हींको सरकारने दत्तक लेनेका अधिकार दिया । उस आज्ञापत्रमें यहभी लिखा था कि "महाराज कर्नल फेरको वध करनेके अपराध में पदच्युत नहीं किये गये हैं किन्तु उनके प्रसिद्ध दुराचार और राज्यकी उन्नति न करनेका उन्हें यह दंड दिया गया है ।" आजकलके महाराज श्रीमान् सयाजीराव को श्रीमती जमनाबाईने दत्तक लिया और उनका यह कार्य गवर्नमेंटने स्वीकार किया ॥

अध्याय ३८.

भारतवर्षकी मनुष्य गणनायें।

श्रीमतीके शासनमें भारतवर्षकी तीनवार और उनकी मृत्युके वर्षमें एक बार इस तरह सन्१८७१,सन्१८८१,सन्१८९१सन्१९०१ई०कुल चारबार मनुष्यगणना हुई। सन् १८७१ई० में जो गणना हुई उसकी रिपोर्ट सन् ७५ ई० में प्रकाशित हुई थी। इससे पूर्व अवध, पंजाब और बराड़ प्रान्तकी गणना तीन चार वर्ष पहले होचुकी थी इस लिये उस समय ये प्रान्त न गिनेगये। दोनोंबार की गणनाको जोड़कर सरकारने प्रकाशित किया कि भारतवर्षकी गवर्नमेंटके अधिकारमें ९लाख ४ हजार ४९ वर्गमील धरतीपर १९ करोड़ ५ लाख ६३ हजार ४८ मनुष्य बसते हैं। देशीरजवाड़ोंकी गणनाको इसे संयुक्त करनेसे भारतवर्षमें कुल भूमि १४ लाख ५० हजार ७४४ वर्गमील और २६ करोड़ ८८ लाख ३० हजार ९५८ मनुष्य हुए। इनमेंसे सरकारी राज्यमें हिन्दू १४ करोड़ ५ लाख और मुसल्मान ४ करोड़ ७॥ लाख। परंतु इसबारकी मनुष्यगणना ठकि नहीं थी इस लिये सरकारने दशवर्ष बाद सन् १८८१ई० में फिर गिनतीकी और तबहीसे यह नियम करदिया कि प्रतिदश वर्षमें इस देशकी गणना हुआ करै॥

सन् १८८१ ई० के वर्षमें जो गणना हुई उसमें काश्मीर और नेपाल सिवाय भारतके समस्त देशीराज्यभी संयुक्त कियेगये इस गणनाके अनुसार भारतवर्ष भरमें २५ करोड़ ४० लाख मनुष्य हुए। इस संख्यामें से२०करोड़ ४० लाख ब्रिटिश राज्यके और ५ करोड़ देशी रजवाड़ोंके। इस गिनतीके समय मेवाड़ और बंबई प्रान्तके भीलोंने शिर उठाकर मनुष्य गणना विभागके कर्मचारियों पर आक्रमण किया था। इसका कारण यह बतलायागया था कि गिनती करनेसे भीलोंके चित्तपर कुछ भ्रम हुआ है किन्तु पछिसे बिदित हुआ कि शराबके नवीन आईन ने उन्हें असंतुष्ट कर दिया था॥

इससे ठीक दशवर्ष बाद सन् १८९१ई० की १६ फरवरी को भारतवासियों की फिर गणना हुई। उसके साथ सन् १९०१ की तुलना करने के लिये दोनों वर्षों का लेखा साथ २ लिखा गया है—

ब्रिटिशराज्य ।

	सन् १८९१	सन् १९०१	–घटे+बढ़े
अजमेर मेरवाड़ा	५४२०००	४७६०००	–१२·१७
आसाम	५४३३०००	६१२२०००	+१२·६७
बंगाल	७१३४६०००	७४७१३०००	+४·७२
बराड़	२८९७०००	१४९१०००	–४९·९
बंबई	१५९५७०००	१५३३००००	–३·९३
सिंध	२८७१०००	३२१२०००	+११·८८
अदन	४४०००	४१०००	–६·४८
अपर ब्रह्मा	३३६२०००	३८४९०००	+१४·४९
लोअर ब्रह्मा	४४०८०००	५३७१०००	+२१·८४
मध्यप्रान्त	१०७८४०००	९८४५०००	–८·७१
कुर्ग	१७३०००	१८००००	+४·२८
मदरास	३५६३००००	३८२०८०००	+७·२४
पश्चिमोत्तर प्रदेश	३४२५३०००	३४८१२०००	+१·६३
अवध	१२६५००००	१२८८४०००	+२·४०
पंजाब	२०८६६०००	१२४४९०००	+७·५८
बलूचिस्तान	०	८१००००	०
अंडमन	१५०००	२४०००	+५६·९५
ब्रिटिशराज्यका जोड़	२२१२६६०००	२३१०८५०००	+४·४४

देशी रजवाड़े ।

	सन् १८९१	सन् १९०१	–घटे+बढे.
हैदराबाद	११५३७०००	१११७४०००	–३·१४
बड़ौदा	२४१५०००	१९५००००	–१९·२३
मैसूर	४९४३०००	५५३८०००	+१२·०
काश्मीर	२५४३०००	२९०६०००	+१४·२४
राजपूताना	१२०१६०००	९८४१०००	–१८·१
मध्यभारत	१०३१८०००	८५०१०००	–१७·५
बंबई	८०५९०००	६८९१०००	–१४·४९

मदरास	३७०००००	४१९००००	+१३·२३
मध्यप्रान्त	२१६००००	१९३८०००	-८·१९
बंगाल	३२९६०००	३७३५०००	+१३·३३
पश्चिमोत्तर प्रदेश	७९२०००	७९९०००	+·९१
पंजाब	४२६३०००	४४३८०००	+४·१२
ब्रह्मदेश	०	१२२८०००	०
रजवाडोंका जोड	६६०५००००	६३१८१०००	-४·३४
भारतवर्षका जोड	२८७३१७०००	२९४२६६०००	+२·४२

यद्यपि सन् १९०१ की मनुष्य गणना श्रीमतीके स्वर्गवास के अनन्तर हुईहै। परंतु उससे आपके शासनके अंतिम दश वर्षमें भारतवर्षकी कैसी स्थिति रही, इसका दिग्दर्शन होता है इसकारण यहां लिखी गई है। चारों गणनाओंकी परस्पर तुलना करनेमें पुस्तक वढ़जानेका भय है। आशा है कि, पाठक स्वयं इस कार्यका बोझा अपने ऊपर लेंगे॥

अध्याय ३९.

श्रीमान् प्रिंस आफ् वेल्सका भारतवर्षमें स्वागत।

विलायती कपड़ेपर कर।

सन् १८७५ ई० में भारतके इतिहासमें सबसे आवश्यक कार्य श्रीमान् युवराज के भारत पधारनेका हुआ। यह वही महोदय हैं जो अब श्रीमान् सप्तम एडवर्डके नामसे राज्य करते हैं इनके भारतआनेका संकल्प इंग्लैंडके प्रधान अमात्य मिस्टर डिसरायली (लार्ड बीकान्सफील्ड) ने ८ जुलाईको प्रकाशित किया। और इस यात्राके लिये ३ लाख रुपया भारत गवर्नमेंटके खर्च करनेका निश्चय किया और इसके साथही ६लाख रुपये उन्होंने विलायती कोषसे देनेका पार्लियामेंटमें प्रस्ताव किया। भारतवर्षपर इसप्रकारके खर्चका बोझा डालनेके विषयमें प्रोफेसर फासेट और मिस्टर हेन्की विरोधीहुए किन्तु उनकी बात चलीनहीं। ११ अक्टूबर को श्रीमान् 'सेरापीस' धूमपोत द्वारा विलायतसे बिदाहोकर पैरिस, इटाली, एथेंस, पौर्टसैद, केरो और अदन होतेहुए ३० नवंबर को बंबईमें पहुँचे। मार्गमें श्रीमान्ने माताकी आज्ञानुसार केरोमें मिसरके खेदीव को जी. सी. एस. आई. की पदवीदी। आपका स्वागत करनेके लिये श्रीमान् गायकवाड नरेशके सिवाय और २ कई एक राजाभी बंबई आये थे। भारतवर्ष भरमें

एक छोरसे दूसरे छोर तक श्रीमान्‌ने भ्रमण किया। और बड़े २ रजवाडोंमें पधारकर राजाओंसे भेंटकी। श्रीमान्‌के सम्मानमें आगरे में एक बडा दर्बार हुआ जिसमें भारतवर्षके प्रायः सबही छोटे बड़े राजा इकट्ठे हुए। भारतवर्षकी प्रजाको युवराजके मुखकमलके दर्शनसे अत्यानन्द हुआ। और युवराजने इस देशसे विदाहोनेके अनन्तर भारतवर्षके वाइसराय लार्ड नार्थब्रूकको पत्र लिख कर भारतवासियोंको धन्यवाद दिया। इस विषयमें अधिक बातें इस पुस्तकके अंतमें श्रीमान् सप्तम एडवर्डके चरित्रमें लिखी गई हैं ॥

जिस समय प्रिंस आफ् वेल्सके आतिथ्यमें भारतवर्ष आनन्द सागरमें हिलोरे ले रहाथा उसी समय भारतीय विभागके स्टेट सेक्रेटरी लार्ड सालिस्बरी और भारत के वाइसराय लार्ड नार्थब्रूककी आपसमें खटपट खड़ी होगई। और इसका परिणाम यह हुआ कि लार्ड नार्थब्रूकको अपना पदत्यागनापड़ा। सन् १८७४ ई० की १५ जुलाईको शिमलेकी व्यवस्थापक सभाने व्यापारके पदार्थों पर करडालनेकी इच्छासे लार्ड सालिस्बरीके पास कुछ लिखापढ़ी की थी और उसीके अनुसार ५ अगस्तको कर डालदियाथा। लार्ड सालिस्बरी ने लिखाथा कि, भारत वर्षकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है इसलिये विलायती कपड़े और सूतके भारत आनेका कर निकालदेना चाहिये। यह पत्र भारतमें पहुँचने पूर्वही वाइस-रायने ५ अगस्तको लार्ड सालिस्बरी के नाम एक तारदिया जिसमें लिखा कि महसूल संबंधी वर्तमान नियमोंका संशोधन कर भारतसे बाहर जानेवाले मालका महसूल बिलकुल उठादियागयाहै और साथही बाहरसे आने वाले मालका महसूल साढ़े सात रुपया सैकड़ा की जगह घटाकर पांचरुपया रक्खा गयाहै। और कपड़े तथा सूतका महसूल ज्योंका त्यों स्थिर रखकर लंबे धागे के तारकी रुईपर महसूल डालागयाहै। इस तारको पातेही लार्ड सालिस्बरी क्रुद्ध होगये और तारद्वारा वाइसरायसे पूंछा कि अधिक आवश्यक और गंभीर विषयों पर आईन बनानेसे पूर्व उनके विषयमें स्टेट सेक्रेटरीसे आज्ञा मांगनेका जो नियम है उसपर अमल क्यों नहीं किया गया। इसके उत्तरमें वाइसरायने १६ अगस्तको लिखा कि, व्यापारियोंकी ओरसे इस संशोधनकी बहुत राह देखी जातीथी, कलकेत्तकी चेम्बर आफ् कमर्सने दो प्रार्थना पत्र देकर इस विषयमें त्वराकी थी, निकास व्यापारके लिये अनुकूल ऋतु आपहुँची थी और विलायतसे स्वीकार कराकर आईन बनानेमें बहुत विलंब लगनेकी संभावना थी और इससे बहुत कुछ हानि होती। इसपर लार्ड सालिस्बरीने उनको दबाकर इस बात पर फिर विचार करनेका अनुरोध किया इसी बातसे असंतुष्ट होकर उन्होंने अपना पद त्याग दिया ॥

अध्याय ४०.

श्रीमतीको 'महारानी' की पदवी ।

भारतवर्षका शासन रानीके हाथमें आनेके बाद यूरोपमें श्रीमतीकी पदवी के विषयमें बहुत कुछ चर्चा हुई । रूसने कहा कि, रानीका पद भारतके साधारण राजाओंसे बढ़कर नहीं है । अन्य राज्योंसे पत्र व्यवहारमें श्रीमतीके भारतका शासन हाथमें आने बाद केवल रानीके अतिरिक्त कुछ उपाधि नहीं लिखी जाती थी । इन कारणोंसे इंग्लैंडमें श्रीमतीके पदके विषयमें बहुत चर्चा होने लगी । ऐसे अवसरमें सन् १८६८ई० में ईरानके शाहने एक पत्र लिखा था उस पर बहुत झगड़ा उठा । उस समय यह निश्चय हुआ कि, किसी प्रकारसे पदवी के विषयका निपटारा करना चाहिये । परंतु इस कार्यको प्रकाशित करने पूर्व यह संदेह था कि, कहीं भारतके राजा इससे अप्रसन्न न हो बैठें इसलिये गुप्त परामर्शके बाद श्रीमान् प्रिंस आफ् वेल्स भारतके राजाओंकी भक्ति और इच्छा जांचनेके लिये भेजे गये । सन् १८७५ ई० में युवराजका भारतमें परम सत्कार हुआ और यहां की प्रजा और राजाओंने शुद्ध अंतःकरणसे उनको भावी सम्राट् माना । इससे निश्चय होगया कि श्रीमतीको भारतवर्षकी साम्राज्ञी बनाना उचित है । इसी अवसरमें रूसके द्वितीय ज़ार निकोलसने मध्य एशियाके सम्राटका पद धारण किया बस इसीपर रानी विक्टोरिया को साम्राज्ञी विक्टोरिया वा महारानी विक्टोरियाका पद देना निश्चय होगया ॥

१७ फरवरी सन् १८७६ ई० को इंग्लैंड के प्रधान अमात्य मिस्टर डिसरयलीने श्रीमतीको "एम्प्रेस आफइंडिया" की उपाधि दिलाने के लिये पार्लियामेंट में एक बिल उपस्थित करते समय कहा कि, "श्रीमतीके पदवी धारण करनेसे भारत की प्रजा और राजा बहुत प्रसन्न होंगे । यह बात भलीप्रकार प्रमाणित होचुकी है । " इसबातपर पार्लियामेंटमें बहुत वादानुवाद हुआ और कितनेही लोग कहने लगे कि, इंग्लैंडके राजनियमानुसार रानी ऐसा पद धारण नहीं कर सकती हैं । इसपर मिस्टर डिसरायलीने उनको यह समझाकर संतुष्ट किया कि "श्रीमती इंग्लैंडकी रानीही रहेंगी । यहांकी महारानी नहीं बनना चाहतीहैं । " इस उत्तर को पाकर पार्लियामेंटने इस विषय का आईन पास कर दिया । इसके पश्चात् १ मई को लंडन मिडल सेक्स और एडिनबरोके शेरिफों द्वारा इंग्लैंडमें इसका ढिंढोरा पिटवाया गया । इसमें स्पष्टरूपपर यह नहीं लिखाथा कि, श्रीमती केवल

भारतवर्षकी महारानी और इंग्लैंडकी रानी रहना चाहती हैं इसलिये प्रजामें हलचल मचगई । और पार्लियामेंटमें मंत्रि मंडल के विरुद्ध अविश्वासकी प्रार्थना उपस्थित कीगई । इसपर प्रधान अमात्यने उपाधिका प्रयोजन समझाकर प्रजा को प्रसन्न करदिया ॥

श्रीमतीको जो उपाधि देना निश्चयहुआ उसे अंगरेजीमें "एम्प्रेस आफ् इंडिया" कहते हैं । इसका अर्थ यह होता है कि, भारतवर्ष के सम्राट्की स्त्री परन्तु इनके विषय में यह बात नहीं थी । इसलिये भारत वर्ष की देश भाषाओंमें इसका ठीक अर्थ क्या किया जायगा ? यह प्रश्न प्रोफेसर मैक्सम्यूलर और सर विलियमम्यूर से पूँछागया । प्रोफेसरने कहा कि "महारानी" ठीकहै और म्यूरसाहबने "कैसर हिन्द" ठीक बतलाया । 'महारानी' की अपेक्षा गवर्नमेंटकी दृष्टिमें 'कैसरहिन्द अधिक प्रभावशाली देखपड़ा इसलिये सर्कारी काग़जों में यही लिखापढ़ा जाता रहा किन्तु साधारण प्रजा अपने प्रियतमको किसी सरल शब्दसे संबोधन करती है और सरल शब्द ही से लोगोंके हृदय पर अधिक प्रभाव उत्पन्न करता है इसलिये भारत वर्ष की प्रायः सबही भाषाओं में "महारानी" शब्द का अनायास प्रचार होगया । "कैसरहिन्द" के दो अर्थ हैं एक भारतवर्ष का सिंह और दूसरा "भारतवर्षका सीजर" । इनमेंसे प्रथम का अर्थ प्रकटहै और सीजर रोमन राज्य में सर्वोत्कृष्ट शासक था बस उसीके नाम पर कदाचित् सर विलियम म्यूरने इस पदकी योजनाकी होगी ऐसा अनुमान है ॥

अध्याय ४१.

दिल्लीका राजसी दर्बार ।

श्रीमतीके 'महारानी' पद धारण करनेकी सूचनाके लिये एक ढिंढोरा १ जनवरी सन् १८७७ ई० को प्रकाशित किया गया था । इस बातका हर्ष प्रकाशित करनेके लिये उसदिन दिल्लीमें एक वृहत् और प्रभावशाली दर्बार इकट्ठा हुआ । सौभाग्यमें दुर्भाग्य का चिह्न इतनाही था कि, उस समय देशभरमें भयंकर अकाल पड़नेका पक्का निश्चय होचुका था इसलिये भारतवर्षके वाइसराय लार्ड लिटनने राजाओंको सूचित करदिया था कि, जिनके राज्यमें अकालका भय अधिकहो उनके उपस्थित होनेकी आवश्यकता नहीं है परंतु देशभरके प्रायः सबही राजा महाराजाओंने इस भयंकर आपत्तिको तिनके समान गिनकर इस राजवैभव और महोत्सवमें संयुक्त होना अपनी शोभा और

कर्तव्य समझा और अपनी २ सेना, हाथी, घोड़े, राजकुटुम्ब, सर्दार, जागीरदार और उमरावों समेत दिल्लीमें इकट्ठे हुए। उस समय दिल्लीकी शोभा राजा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञका स्मरण दिलातीथी। २३ दिसम्बरको वाइसराय स्पेशल ट्रेनद्वारा दिल्ली पहुँचे। हैदराबाद के निजाम, ग्वालियर, इंदोर, मैसूर, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, बूंदी और कोटा आदि के राजा महाराजाओंने स्टेशनपर आप का स्वागत किया। इसके बाद तीन दिन तक वाइसरायने भिन्न २ राजाओंसे भेंटकी। इसके अनंतर १ जनवरीको शाही दर्बार हुआ। दर्बारमें एक उच्च सिंहासनपर लार्ड लिटन आसीन हुए। उनके आसपास अपने २ पदके अनुसार अर्द्धचन्द्राकार में राजालोगों को बैठनेका स्थान मिला। इस प्रभावशाली दर्बारमें भिन्न २ वस्त्रालंकारों से सुसज्जित राजालोगों के विराजनेके अनंतर लाट साहबने खड़े होकर अंगरेजीमें महारानीका ढिंढोरा सुनाया। अँगरेजीका व्याख्यान समाप्त होनेबाद वही ढिंढोरा उर्दू में पढ़ा गया। इतना होतेही १०१ तोपों की सलामी हुई। वाइसरायने अपने व्याख्यान में भारत वर्ष में ब्रिटिशराज्य का संस्थापन, उसकी उन्नति, स्थिर रहनेके कारण, देशी राजाओं और प्रजाकी राजभक्ति और सर्कारी कर्मचारी और सेनाकी प्रशंसा की। और कहा कि इन्हीं कारणों से हम लोगोंको आजका दिन देखना नसीब हुआ है। और श्रीमतीको अपने शासन में देशकी नानाप्रकारसे उन्नति करनाही अभीष्ट है। वाइसरायका व्याख्यान समाप्त होतेही सब लोगोंने खड़े होकर हर्षनाद किया। दिल्लीकी जीनतुल मसजिद और फतेपुरकी मसजिद इस हर्षमें गवर्नमेंट ने मुसल्मानोंको लौटादी। राजा महाराजाओंके लिये 'इंडियन इम्पाइर' के नाइट्की उपाधियां उसी समयसे निकाली गई और यथायोग्य रीति पर इस दर्बारमें सब राजाओंको इस प्रकारकी पदवीसे भूषित किया गया। इस उत्सवके हर्षमें १६००० कैदी बंधमुक्त किये गये॥

दिल्ली हिन्दू और मुसल्मान राजाओंकी बहुत कालसे राजधानी चली आती है इस लिये यह स्थान इस कार्यके लिये अधिक उत्तम समझा गया। इस उत्सव पर अपने २ ठाठ समेत अनुमान ४०० राजा महाराजा इकट्ठे हुएथे। केवल दिल्ली ही में क्यों बरन भारत भरमें उस समय अपार हर्ष था। जो लोग इस दर्बार के समय उपस्थित थे उन्होंने आतिशबाज़ी और रोशनी की बड़ी प्रशंसा की॥

पुराने समयके राजसूय यज्ञों में जब राजालोग इकट्ठे होते थे परस्पर स्पर्द्धा और ईर्षाका जन्म होताथा किन्तु इस दर्बारने राजाओंके मध्य प्रेम उत्पन्न किया और वे आपसमें भाई२की तरह मिले । बहुत वर्षोंमें इसतरह राजाओंके इकट्ठे होनेका यह अवसर आया था और आपसमें खिंचाखिंची होनेकी संभावना थी किन्तु, आजकल देशीराजाओं में आपसका जो मेल देखा जाताहै उसका जन्म इसी स्थानसे हुआ था । सत्य पूंछो तो ब्रिटिश शासनमें बाघ बकरी एक घाट पानी पीनेका यह दर्बार एक नमूनाथा । यह दर्बार रंग विरंगे वस्त्र, तरह २ की सजावट और नई २ सूरतोंके लिये एक प्रदर्शन था । आश्चर्य-कारक पदार्थोंके लिये अजायबखाना था और पुराने ढंगके राजसी ठाठका संग्रहस्थान था । इस उत्सवपर राजामहाराजाओंकी सेना और सरकारी कर्म-चारियों तथा सेनाके अतिरिक्त टीडीदलकी तरह लाखों मनुष्य दर्शक बनकर आये थे । इतनी अभूतपूर्व भीड़को स्थान देकर दिल्लीने यह दिखला दियाथा कि, मैं अनादिकालसे भारतवर्षकी राजधानीहूं और अनेक बार ऐसे मेले मेरे घरमें इकट्ठे होचुकेहैं ॥

लाट साहबने उपाधि और पदकके साथ एक २ झंडाभी प्रत्येक महाराजाको दियाथा । इसको प्रदान करतेसमय आप कहते जाते थे कि– "श्रीमती महारानीके भारत वर्षकी साम्राज्ञीकी उपाधि धारण करनेके स्मरण निमित्त यह आपके घरानेके राजचिह्न युक्त झंडा महारानीकी ओरसे आपकी भेंट करताहूं । श्रीमती महारानीको विश्वासहै कि, इस झंडेको उड़ाते समय इंग्लैंडके मुकुटके साथ आपके शुभचिंतक राजवंशका जो दृढ़ सम्बन्ध है उसे और इसीतरह आपका शासन दृढ़ उन्नतिशाली और स्थिर रखनेकी इच्छा जो सरकारी अधिकारी रखते हैं उसे आप स्मरण रक्खें गे । श्रीमती महारानीकी आज्ञासे इस पदकसे मैं आपका शृंगारवर्द्धन करताहूं । आप इसे वर्षोंतक पहने और आपके कुटुम्ब में इस उत्सवके स्मरणार्थ यह दीर्घ कालतक रक्षित रहै यह मेरा आशीर्वाद है" ॥

अध्याय ४२.

भारतमें आँधी और दुर्भिक्ष ।

सन् ७६–७७ के सालमें जैसे श्रीमतीके महारानीकी उपाधि धारण करने का महोत्सव हुआ उसी तरह देशको दो भयंकर आपदाओंने भी धर दबाया था।

इस वर्षके अक्टूबर मासमें बंगालेकी खाड़ीमें भयानक आँधी आई। इस आँधी से बाकरगंज और नोआखालीके जिले तहश नहश होकर २ लाख १५ हज़ार मनुष्योंके प्राणगये। उस समय बंगालमें सर रिचार्ड टेम्पल लेफ्टिनेंट गवर्नर थे। उन्होंने अपनी रिपोर्टमें लिखाथा कि "३१ अक्टूबरकी रात्रिमें बंगालकी खाड़ी में बहुत भयानक आँधी आई। पवनके वेगसे बीस२ फुटकी लहरें उठने लगीं। कितनीही जगहकी तरंगें इससे भी बढ़कर थीं। रात्रिको सोनेके समय आँधीके बिलकुल चिह्न दिखाई नहीं देते थे किन्तु ११ बजेके लगभग एकाएक तूफान ने बलपकड़ा और तुरंत चारोंओरसे रोना पीटना मचगया। इसी समय दोनों जिले जलमग्न होगये। बाढ़की शीघ्रतामें लोग अपने छप्परोंपर भी न चढ़ने पाये। पानीके दबावसे मकान बैठगये। मनुष्यों और चौपायोंकी लाशोंके ढेर लगगये। तीन हज़ार वर्गमील भूमिमें यह तूफान था। यहां १० लाख ६२ हज़ार मनुष्य बसते थे जिनमें चौथाईके लगभग मरगये" ॥

'दूखते चोट और कनौडे भेट' की कहावतके अनुसार आपत्तिपर आपत्ति आया करती है। इस वर्षमें बंगाल प्रान्तको आँधीसे दुःख सहना पड़ा तब अन्य प्रान्तोंको अकालने आ दबाया। दक्षिण भारतके कईएक जिलोंमें वृष्टि बिलकुल न हुई। और मदरास बंबई तथा हैदराबाद राज्यमें असमय और आवश्यकतासे कम मेह बरसा। इस कारण खेतोंमें एक दानाभी उत्पन्न न हुआ। दिसम्बर मासमें दक्षिण देशका अन्न तिगुना महँगा होगया। ऐसे समयमें बंगाल, ब्रह्मदेश, पश्चिमोत्तरप्रान्त और मध्यदेशमें अन्नकी न्यूनता न थी और अकालपीड़ित भागोंको यथावश्यक अन्न वहांसे मिलसकता था। परन्तु उससमय आजकलकी तरह रेल्वे और सड़कों का उत्तम साधन न था।इस कारण अन्न पहुँचने में बड़ी कठिनता पड़ी परन्तु सरकारने इसका यथाशक्ति अच्छा बंदोबस्त करदिया। अकालके आरंभ में भूखों मरनेपर भी दीन लोगोंने अकाल मोचनके कामोंमें परिश्रम करना और सैंत में अन्न लेना स्वीकार न किया किन्तु नवंबर दिसंबरमें एकदमसे लाखों ही सहायता के लिये टूटपड़े। अकालकी स्थिति जाननेके लिये गवर्नमेंट ने सर रिचार्ड टेम्पल को नियत किया तो उन्हों ने जांचके पश्चात् रिपोर्टकी कि जिन लोगों में पेट भरलेनेकी शक्ति है वे भी सरकारी सहायतामें आपड़े हैं। इसपर गवर्नमेंट ने छोटे २ काम बन्दकर अकाल पीड़ितों का दैनिक वेतन कम कर दिया। इसप्रकार का उद्योग करने पर भी अपरैलके अंतमें मदरास में ७ लाख १६ हज़ार, मैसूर में ६२ हज़ार और बंबई प्रान्त में २ लाख ८७ हज़ार अकाल

पीड़ित थे। यह गणना काम करनेवालोंकी थी किन्तु अशक्तोंकी दशा बिलकुल बुरी थी। जुलाई के अंतमें मदरासमें ८ लाख ३९ हज़ार बंबई में १ लाख ६० हज़ार और मैसूर में १ लाख १ हज़ार अशक्त थे। अकाल मोचनके काम देरसे आरंभ हुए थे। मदरास बंगलोर आदि नगरों में सड़कके दोनों ओर मुरदों के ढेरलगे थे हैज़ा, अतिसार और भूखसंबंधी रोगोंने लोगोंका सर्वनाश करदिया। सरकारी रिपोर्ट से मालूम होता है कि, इस अकाल में १३॥ लाख मनुष्य कालके कवर बनगये। मृत्यु संख्याकी वृद्धि के साथ जन्म संख्याभी घटगई थी। लंडन के लार्ड मेयरने जो फंड इस कार्यके लिये इकट्ठा किया उसमें लगभग पचास लाख रुपया इकट्ठा हुआ। गवर्नमेंटने इस कार्य में ९॥। करोड़ रुपया खर्च किया॥

इस अकालसे गवर्नमेंटको एक आवश्यक शिक्षा मिली। उसने प्रतिवर्षअकाल की रक्षाके लिये १॥ करोड़ रुपया अथवा प्राति दशवर्ष में १५ करोड़ रुपया सरकारी कोष में से अलग करने का ठहराव किया। खर्चमें घटा बढ़ीकर इतना रुपया इकट्ठा नहीं किया जासकता था इसलिये सरकारको विशेषकर डालनेकी आवश्यकता हुई। इस कार्य को संपादन करने के लिये भारत गवर्नमेंटने मान्तीय गवर्नमेंटोंको अपने २ कामों में स्वतंत्रता देकर ४० लाख रुपया तो उनसे लिया और शेष में भूमिकर बढाने के सिवाय लाइसेंस टैक्स डालकर रुपया इकट्ठा करालिया। यह फंड लार्ड लिटन के समयमें नियत हुआ था। लार्ड रिपन और लार्ड डफरिनने इसमें कुछ हाथ न डाला किन्तु रुपये की भीड़ आ पड़ने पर लार्ड लैंसडौन ने प्रजापर अकाल के लिये कर डालकर इकट्ठा किये हुए द्रव्यसे काबुल और पश्चिमोत्तर सीमाकी लड़ाईमें जो गवर्नमेंटका व्यय हुआ था उसकी क्षतिकी पूर्ति करली और अकाल फंड नामको भी न रहा॥

अध्याय ४३.

रूस और रूमका अंतिम संग्राम।

सन् ७७–७८ ई०में रूसका रूमसे अंतिमवार भयंकर युद्ध हुआ। क्रीमियाके युद्धमें रूमकी इंग्लैंड और फ्रांसने मिलकर सहायतादी थी इसका रूमपर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। वह इस बातसे बिलकुल निश्चिन्त होगया। उसने राज्यको दृढ करने और प्रजाकी उन्नति करनेका कुछ भी प्रयत्न न किया

किन्तु क्रीमियामें हार खानेके दिनसे रूसने धीरे २ अपनी शक्ति बढ़ाना आरंभ किया। और बातकी बातमें उसने इतनी शक्ति उत्पन्न करली कि सन् १८७०-७१ ई० का संधिपत्र होते समय उसने निर्भय होकर कह दिया कि मैं अबइस बातके लिये बँधा हुआ नहीं हूं। उसकी शक्ति बढ़ती देखकर कोई भी राज्य उसकी ओर शिर उठाकर न देखसकी। इसके साथही रूम राज्यमें अनेक घटनायें ऐसी हुईं जिनसे दिन २ वह निर्बल पड़ता गया। और उसके सहायक राज्योंने भी रूमके लिये उदासीनता ग्रहणकी। सन् १८७५ ई० के जुलाई मासमें बोसनिया और हर्जे गोविना नामक दो रूमी प्रदेशोंमे बलवा होगया। सर्वियाने रूमकी अधीनता छोडकर स्वतंत्र मार्ग लिया। डैन्यूब नदीके निकटवर्त्ती वालेकिया और मोलडेविया प्रान्त मिलकर रोमेनियाके नामसे अलग राज्य बन बैठा। इस तरह क्रीमियाके युद्धके पश्चात् पैरिसमें जो संधिपत्र परस्परकी सहायताके लिये तैयार हुआ था वह धूलमें मिलगया। बोसनिया और हरज़ेगोविनाके उपद्रवको शांत करनेका प्रयत्न निष्फल गया। रूमके राजनीतिज्ञ कहने लगे कि उपद्रवियोंको केवल रूसही क्यों बरन आस्ट्रिया, सर्विया और मोंटनिग्रोकी प्रजा सहायता दे रही है। उन्होंने इंग्लेंडसे प्रार्थनाकी कि आस्ट्रियाको दबाकर उपद्रवियोंकी सहायता बंद कराओ। यही बात सर्विया और मोटनिग्रोकी गवर्नमेंटोंसे कहीगई। परंतु उपद्रवका बल किसी तरह घटा नहीं। अंतमें यूरोपके पश्चिमी राज्योंने इस बखेड़ेमें पड़कर निपटारा करानेका निश्चय किया। आस्ट्रियाने एक पत्र रूमके नाम लिखनेकी सम्मतिदी जिसमें उससे कहाजावै कि आपने अपने राज्यको प्रबंध सुधारनेका जो वचन दिया था उसका अभीतक पालन होना तो एक ओर रहा किन्तु दिन २ प्रबंध बिगड़ता जाता है इस लिये हम रूमके प्रबंधमें हस्ताक्षेप करते हैं। ३० दिसंबर सन् १८७५ ई० को इसके अनुसार पत्र तैयार हुआ। इसमें आस्ट्रियाके साथ रूस, और जर्मनीने हस्ताक्षर किये, फ्रांस और इटाली भी इस बातसे प्रसन्न हुए किन्तु इंग्लैंडके मनमें न आई। इंग्लैंडने इसकार्यमें इतनी देरीकी कि अंतमें इस पत्रपर हस्ताक्षर करनेका स्वयं रूमराज्यने अनुरोध किया। इंग्लैडके संयुक्त होनेवाद वह पत्र रूमको भेजा गया। रूमने उसके अनुसार चलनेका प्रण किया परंतु सप्ताहपर सप्ताह बीतने परभी इसकी कुछ कार्यवाही न हुई। अवसर साधकर रूसने, आस्ट्रिया और जर्मनीको प्रेरणाकी। उसकी सम्मतिसे तीनों राज्योंके प्रतिनिधियोंने बर्लिनमें इकट्ठे होकर उस सूचनाके अनुसार रूमको दबाकर काम कराना निश्चय किया। इस सम्मातिमें इंग्लैंडने साथ न दिया। इससे इस पत्रका रूमपर पूरा प्रभावन पड़ा और परिणाम यह हुआ

कि सेलोनिकामें उपद्रव खड़ा होगया। वहांके फरांसीसी और जर्मन राजदूत-मारे गये। इसी तरहका उपद्रव कुस्तुनतुनियामें भी हुआ और उपद्रवियोंने रूमके सुलतान अबदुल अज़ीज़को पदच्युत कर दिया। सुलतान पदच्युत होनेके बाद दो एक दिनमें आत्मघात करके मर गये उनके भतीजे मुरादने केवल तीनही मासराज्य किया। लोगोंने उनको उतारकर हमीदको गादी दी। इसके बाद भी उपद्रव बढ़ता ही गया। बलगेरियाके उपद्रवियोंने स्त्री बालकोंको काटडाला अंगरेजी दूतमिस्टर बेरिंगकी रिपोर्टसे जानागया कि १२ हज़ार मनुष्य फिलिपो पुलिसके हाथसे मारे गये हैं। रूम गवर्नमेंटने उपद्रव करनेवाली सेनाको दंड देनेके बदले पदवियां दी। सन् ७६ मे मोंटनिग्रो और सर्वियाने रूमसे खूब युद्ध किया। लड़ाईमें दोनोंकी हार देखकर रूसने बीचमें पड़कर युद्ध बंद कराया। इससमय इंग्लैंडने सम्मति दी कि सबराज्योंके रूमस्थित दूतोंको रूमराज्यकी रक्षा और वहांके प्रबंधको सुधारनेकी योजना करना चाहिये। इसबातको सबने स्वीकार कर रूमको पत्र लिखा किन्तु वह जानते थे कि कैसाभी दवाव हमारे ऊपर पड़े समयपर हमारी सहायता किये विना इंग्लैंडकी हानि है इस लिये उसने इस पत्रको सुना अनसुना करदिया। अंतमें रूसने सन् १८७७ई० के अपरेलकी २४ तारीखको रूमपर चढ़ाई की, रूसने कुछ सेना रूमको और कुछ रूमके एशिया राज्यको भेजी दोनों। राज्योंमें भयंकर संग्राम हुआ। रूस समझता था कि रूम आजकल शिथिल पड़गया है परंतु शिथिल रूमने मरते २ भी पराक्रम दिखाकर रूसके दांत खट्टे कर दिये। यह बात यहां तक पहुंची कि एकवार रूसको हारखाकर लौटनेका भयहुआ। परंतु अंतमें कार्स और प्लेवनाके क़िलोंको रूसने ले लिया। और सन् १८७८ ई० के आरंभमें रूसी सेना इस्तंबोलके निकट जापहुंची। अंतमें सैनस्टिकानो स्थानमें रूमको लाचार होकर एक प्रतिज्ञा पत्रपर हस्ताक्षर करने पड़े। उसका आशय यह था कि रूम राज्यकी ईसाई प्रजा जिन प्रांतोंमें निवास करती है वे स्वतंत्र किये जावे, बलगेरियाके नामसे राज्य अलग स्थापित हो और ईजियन समुद्रका एक बंदर उसे दिया जावै। इन शर्तोंको इंग्लैंडने स्वीकार न किया और रूससे रूमकी सहायतामें लड़नेके लिये कुस्तुंतुनियाकी ओर सेना भेज दी। इसके सिवाय भारत वर्षकी कितनी ही सेना मंगवाकर मालटामें तैयार रक्खी। रूस और इंग्लैंडकी मुठभेड़ होने पूर्व जर्मनीके प्रधान अमात्यने बीच बिचाव किया। उन्होंने कहा कि सैनस्टिकानोके प्रतिज्ञा पत्र पर विचार करनेके लिये बड़े २ राज्योंके

प्रतिनिधियोंकी बरलिनमें एक सभा होनी चाहिये। थोड़ी आनाकानीके पश्चात् रूस और इंग्लैंडने इस बातको स्वीकार किया। बर्लिनके कान्फरेंसमें लार्ड सालिस्बरीको लेकर मिस्टर डिसरायली इंग्लैंडकी ओरसे गये। शर्तें ये हुईः— "(१) रोमेनिया, सर्विया और मोंटनिग्रो स्वतंत्र राज्य गिने जायँ (२) बालकन्सके उत्तर बलगेरिया अधीन राज्य स्थापित हो (३) बालकन्सके दक्षिणमें पूर्व रुमीलिया नामक नया राज्य नियत किया जाय (४) यूनान की सीमाके संशोधन किया जाय और रूम तथा यूनानका इस विषयमें परस्पर निपटारा न हो सकै तो सब राज्य मिलकर फैसलाकरैं (५) बास्तीया का शासन आस्ट्रियाको मिलै और वही वहांका प्रबंध करै (६) क्रीमिया युद्धके बाद पैरिसमें जो संधि हुई उसके अनुसार रूससे बिसाटेबिया लेकर रोमेनियाको देदिया गया था वह अब रूसको मिलै और इसके बदलेमें रूस उसे डैन्यूब नदीके टापू और डोबरुड्सका कुछ भाग देदै (७) रूम राज्यके अंतर्गत एशिया देशमेंसे आर्डाहान, कारस और बाटूथ रूसको मिलै और काले समुद्रका एक बंदर भी उसे दिया जाय और (८) रूम राज्यकी रक्षाके लिये इंग्लैंड और रूमकी जो गुप्त संधि हुई है उसके अनुसार साइप्रसका टापू इंग्लैंडके पास रहै।– इस संधिपत्रके विषयमें पीछेसे एक आश्चर्यजनक रहस्य खुला। इस बातसे इंग्लैंडकी निन्दा हुई। रूमकी ओर सेना भेजने और भारतसे सेना मंगानेका कार्य मिस्टर डिसरायलीने केवल दिखावटके लिये किया था किन्तु उन्होंने रूम और रूससे पहले ही गुप्त संधिकर साइप्रसका टापू ले लिया था। और बर्लिनकी कान्फरैंसमें रूसने जो कुछ पाया उसके विषयमें पहलेहीसे इंग्लैंडका रूससे ठहराव होगया था। इसी कारण रूसने बर्लिनके कान्फरैंसमें संयुक्त होना स्वीकार किया था॥

अध्याय ४४.

भारत के समाचारपत्रोंकी स्वतंत्रता।

सन् १८३५ ई० में भारतवर्षके गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बेनटिकने भारतवर्षके समाचारपत्रोंको स्वतंत्रता प्रदानकी थी। सन् १८५८ ई० में लार्ड केनिगने एक वर्षके लिये यह स्वत्वछीन लिया था। सन् ५७ ई० के बलवेके समय भारत वर्षके देशी अंगरेज़ोंने बहुतही स्वतंत्र और उत्तेजक लेखलिखे थे।

लार्ड केनिंगको भय था कि ऐसे उत्तेजक लेखोंके होते हुए भारतवर्षमें शांतिस्थापन नहो सकैगी इसलिये उन्होंने एक वर्षतक समाचारपत्रोंका मुख बंदरखकर अवधि समाप्त होनेपर फिर उन्हें स्वतंत्रता प्रदान कर दी थी ॥

सन् १८७८ ई० में लार्ड लिटनने फिर इस आईनको प्रचलित करदिया। इसमें दोबुराइयां थीं । एक जिससमय देशीपत्रोंकी स्वतंत्रता छीनी गई देशमें किसीप्रकार का उपद्रव न था और दूसरे इस नवीन आईनके अनुसार अंगरेजी पत्रोंकी स्वतंत्रता ज्योंकी त्यों स्थिर रखकर देशीपत्रोंका मुख बन्दकिया गयाथा। इसके विषयमें कार्यवाहीभी प्रायः अनुचित हुई थी। आईन बनानेसे पूर्व लोगोंको अपने २ मत प्रकाश करनेका समय देनेके बदले १४ मार्च सन् १८७८ ई० को व्यवस्थापक सभामें इसका चिट्ठा उपस्थित कर गवर्नमेंटने थोड़े ही घंटोमें इसे पास कर दिया। इंग्लैंडके लिबरल दल ने इस आईन की बहुत निन्दाकी और जब मिस्टर ग्लैडस्टन इंग्लैंडके प्रधान अमात्य हुए लार्ड रिपनके शासनमें सन् १८८० ई० में यह आईन फिर उठा दिया गया ॥

सन १८९७ ई० में बंबई गवर्नमेंटको देशीसमाचार पत्रोंपरसंदेह हुआ। कई एकपत्र संपादकोंको प्रजाको उत्तेजना देने और असंतोष फैलानेके अपराधमें दंड हुआ और सन् १८९८ ई० में लार्ड एलगिनने भारतीय दंड संग्रह में '१२४ अ' कीधारा बढ़ाकर समाचार पत्रोंका मुख आधा बन्दकर दिया । इसका परिणाम यह हुआकि कईएक पत्रोंने राजनैतिक विषयोंमें लिखना कमकर दिया और कितनेही नरमपड़गये किन्तु ऐंग्लोइंडियन पत्रोंका जैसा ढंग पहले था वैसाही बना रहा। कुछभीहो परंतु इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं है कि ब्रिटिशगवर्नमेंटने भारतवासियोंको बोलने लिखनेमें जो स्वतंत्रता दी है वह उसकी उत्तमताका एक चिह्न है और वर्तमान स्वतंत्रतासे भी यदि कोई इसका दुरुपयोग नकरै तो सरकार और प्रजाका बहुत कुछ कल्याण होसकता है ॥

अध्याय ४९.

काबुलका अंतिम युद्ध और रूसीचाल ।

अंबालेमें अमीरशेरअलीकी लार्ड सर जान लारैंससे भेंटहोने बाद काबुल के साथ कुछ कालतक कोई विशेष बात नही हुई थी । सन् १८७८ ई० में लार्ड लिटनको संदेह हुआ कि काबुलके दर्बार में गुप्त प्रपंच प्रवेश होगयाहै ।

इस लिये उन्होंने अमीर शेरअलीको लिखा कि आपके यहां हमारा रेज़िडेंट सदा रखनेकी आज्ञादीजिये। इस बातको अमीरने स्वीकार न किया तब लार्ड लिटनने बहुतसी सेना साथ देकर एकदूतको काबुलभेजा। इसके साथ इतनीसेना भेजी गई जिससे अमीरको निश्चय होगया कि यह दूत नहीं किन्तु चढ़ाई की गईहै। २१ सितंबरको पेशावरसे विदा होकर सेनाके काबुलकी सीमापर पहुंचतेही काबुलके एक कर्मचारीने उसे रोक दिया और कहा कि अमीरकी आज्ञा विना मैं न बढ़नेदूंगा। लार्ड लिटनने इस बातसे गवर्नमेंटका अपमान समझकर युद्ध ठानदिया। लड़ाईमें अफगानी सेना ब्रिटिश सेनाके सामने न ठहरसकी और थोड़े ही समयमें अंगरेजीसेना काबुल पहुंचगई। शेरअली भागगया। उसका पुत्र याकूब अली अमीर हुआ। काबुलमें ब्रिटिश गवर्नमेंटका अधिकार होगया। ५ मई सन् १८७९ ई० को काबुलके साथ भारतगवर्नमेंटकी नवीन संधि हुई। इसमें यह निश्चय हुआ कि सरकार छः लाख रुपया प्रतिवर्ष काबुलको दे और इसके बदले मे अमीर अपने राज्यका कुछ भाग सरकारको देदें। ब्रिटिशदूत सदा काबुलमें रहै। अंगरेज लोग अमीरको समय २ पर रुपया, शस्त्र और सेना देकर शत्रुसे उसकी रक्षाकरैं। इससंधिसे अंगरेज प्रजाको बहुत हर्ष हुआ। परंतु यह हर्ष अधिक काल तक नठहरसका। अफ़गानलोगोंने सन् १८४१ ई० की तरह इस समय भी अंगरेज़ोंके साथ कपट किया। ब्रिटिश दूत सर लुईकेवेनही और उनके साथके सब मनुष्य काबुलमें मारेगये। समाचार पातेही ब्रिटिश सेना दौड़ा दौड़से काबुल भेजी गई और २५ दिसंबरको वह बे रोंकटोक काबुलनगरमें जा घुसी। इसखूनमें संयुक्त होनेका संदेह में अमीर याकूबखां पकड़कर भारत वर्षमें रक्खे गये। वर्तमान अमीर अबदुल रहमान खां इस अवसरमें रूसका आश्रय छोड़कर अफगान तुर्किस्तानमें आगये थे। उनको वहांसे बुलवाकर कहागया कि ब्रिटिश गवर्नमेंट आपको काबुल देकर भारतको लौट जाना चाहती है। यह बात अमीरको स्वीकार हुई और अंतमें सर लिपिल ग्रिफिनने काबुलमें एक दर्बार इकट्ठा कर अबदुल रहमानखांको काबुलका अमीर बनाया। उनसे सर लिपिल ग्रिफिनने स्वीकार कियाकि गवर्नमेंट काबुलमें रेजिडेंट रखनेका आपपर दबाव न डालैगी और न वह भीतरी प्रबंधोंमें हाथ डालैगी। केवल केटा तकके भूभागको अपने अधीन रखकर शेष भाग काबुलको दे दिया गया। इस युद्धमें रुपयेका १ शिलिंग आठ पेन्सके हिसाबसे १ करोड़ ७४ लाख ९८ हजार पोंड व्यय हुआ जिसमेंसे ५ लाख पौंड इंग्लैंडने दिया॥

रूम और रूसके संग्रामके समय इंग्लैंडने रूमकी सहायताकी थी इस लिये इंग्लैंडपर रूसका अधिक कोप था । काबुलके अमीरके दर्बारमें अंगरेजोंका प्रभाव घटानेकी इच्छासे रूसने प्रपंच करना आरम्भ किया । इस प्रपंचका भेद प्रकाश करदेनेके लिये अमीर शेरअलीका रूससे जो पत्रव्यवहार रोरहा था उसे छपवादेनेका प्रस्ताव लार्ड लिटनने किया । गवर्नमेंट इस भेदको खोलनेमें रूससे अधिक शत्रुता होनेका भयकर इस बातमें आनाकानी करती थी इसलिये इस रहस्यकी केवल तेरह प्रतियांही छपवाई गई । इनमेंसे छः भारतवर्ष आई और शेष मंत्रिमण्डलमें रक्खी गई । परंतु न मालूम किस तरह विलायतके "स्टैं-डर्ड" पत्रने इस रहस्यको खोल दिया । इस कार्यसे एक कठिनता उपस्थित हुई । वह यह कि रूसी कर्मचारियोंने अपने ऊपर जोखिम उठाकर ऐसी लिखा-पढ़ीकी थी कि "यूरोपमें बखेड़ा मच जानेका भय है इस लिये रूमकी सहायता के लिये भारतसे गई हुई सेना माल्टामें रोकदीजावे । इस बातका रूसवालोंको अधिकार मिले" इसके साथही काबुल और इंग्लैंडके बीचमें विग्रह करादेनाभी इसमें लिखाहुआ था । इस संधिपत्रमें १० शर्तें थीं (१) रूस और काबुलकी सदा मित्रता रहै (२) शेरअलीका उत्तराधिकारी अबदुल्लाजान मरगया इस लिये वह जिसे गोदले उसे रूस स्वीकार करै (३) परदेशी शत्रुओंसें काबुलको बचा कर उन्हें निकाल देनेमें रूस काबुलका सहायकहो (४) इन शर्तोंके बदलेमें अ-मीर रूसकी सम्मति बिना किसीसे युद्ध न करै (५) काबुलमें जो घटनाहो उसकी दम २ पर रूसको सूचना देती रहै (६) रूसी जनरल काफमैन काबुल में रहै और उनकी इच्छाके अनुसार अमीरको बर्त्तना पड़े (७) रूसमें जो काबुलका व्यापार होता है उसकी रूस रक्षा करै और (८) अफ़ग़ानिस्तानके जिन लोगोंको विद्योपार्जनके लिये अमीर रूसको भेजे उन्हें शिक्षादीजाय—इनके सिवाय दो शर्तोंका विषय विदित नहीं हुआ परंतु इतना निश्चय हुआ कि उनमें काबुल में शांति रखने और पंजाब काबुल को दिलादेनेका रूसने प्रण किया था । भेद खुल जानेसे रूसकी चाल न चली और लार्ड लिटनके इसी प्रकारके संदेहोंमें काबुलका युद्धकरनेसे जैसी वहांकी स्थिति और भारतको क्षतिहुई वह ऊपर प्रकाशित हुई है । इसके बाद काबुलसे कोई युद्ध न हुआ । अमीर अबदुल रहमानने शनैः ६ काबु-लियोंपर अपना आतंक जमाकर रूस और इंग्लैंडसे मेल कर लिया ॥

अध्याय ४६.

अनेक नवीन आविष्कार ।

सन् १८७८ ई० में संसारको चकित करने और प्रजाका उपकार करनेवाले अनेक नवीन आविष्कार हुए । प्रथम आविष्कार इस वर्ष में टेलीफोन का था । प्रोफेसरबेलेने इस कार्य में सफलता पाकर श्रीमतीको आस्वर्नके राजमहल में इसका तमाशा दिखला दिया । श्रीमतीने प्रथमही बार सर टाम्स और लेडी बाडेल्फ से इसप्रकारके तारद्वारा बातचीतकी और अपने महलमें बैठकर आपने दूरसे मिसकेटफील्डका पायनो बाजेपर गानासुना। इस कार्य में सफलता देखकर श्रीमतीने प्रोफेसरको धन्यवाद दिया । और उसी समयसे शनैः २ टेलीफोन दुनियामें फैलगया ॥

दूसरा आविष्कार एमेरिकाके प्रसिद्ध विद्वान मिस्टर एडीसनने किया । यह शोध बिजलीके प्रकाशकी थी । इससे लोगोंका बड़ालाभ हुआ । गैस और तेल के बिना औषधियोंके योगसे ही विजली उत्पन्नकर उससे प्रकाश करना इसशोध का उद्देश्य है । इसकार्य में उनको सफलता हुई और अब धीरे २ यूरोप और एमेरिका में मिस्टर एडीसनकी योजनाके अनुसार प्रकाश करनेका काम प्रायः विजली से लिया जाता है । इन्हीं महाशयने तीसरी युक्ति ऐसी निकाली जिसके अनुसार सूर्यका प्रकाश रात्रिके समयभी देख पड़े । इस युक्ति में एक काग़ज़का टुकड़ा कितनीही औषधियोंके योगमें डुबोकर उसे सूर्यके प्रकाशमें रक्खा जाताहै धूपमें रखनेसे वह टुकड़ा सूर्य की किरणों को चुरालेता है और जब उसे रात्रिके समय अंधकारमें रक्खाजावै तब उसमेंसे थोड़े समयतक स्वतः प्रकाश होता है॥

चौथा आविष्कार मिस्टर ह्यूज़ने किया । इन्होंने माइक्रो फ़ोन नामक यंत्र तैयार किया । इसमें यह गुण है कि चाहे जैसा मंद स्वर क्यों न हो इसके द्वारा वह चिल्लाकर बोलनेके समान सुना जाता है । जैसे सूक्ष्म दर्शक यंत्रसे परमाणु भी बड़े दिखाई देते हैं वैसे ही इसमें परम मंदस्वर भारी सुन पड़ता है । उदाहरणके लिये मेज़पर एक आलपीन रखनेमें जो शब्द होता है वह ऐसा मंद है कि उसे कोई भी सुन नहीं सकता है परंतु इस यंत्रके बलसे वही शब्द भारी खटकेके समान सुना जा सकता है ॥

पंचम आविष्कार फ़ोनोग्राफ का हुआ । इसे निकालने वाले भी वही प्रोफेसर एडीसन थे । इस यंत्रके निकट जो कुछ बात चीतकी जाती है वा राग

गाया जाता है वह यंत्रमें भरा रहता है और उसे जब और जहां ले जाकर सुनना चाहें सुन सकते हैं। मनुष्यका स्वर भी इसमें अच्छी तरह पहचाना जा सकता है ॥

अध्याय ४७.

पंजाबके गोवध पर बखेड़ा ।

पंजाबके हिन्दू मुसलमानोंमें कुछ कालसे वैमनस्यथा । सन् १८७८ ई० में इसने विशेष गंभीर रूप पकड़ा । हिन्दुओंके चित्तको दुःखित नकर गोबध करनेकी सरकारने मुसलमानोंको स्वतंत्रता दी। इस बातसे दश वर्ष पूर्वसेही बहावल पुरके मुसलमानी राज्यमे हिन्दू मुसलमानोंका इस विषयमें बखेड़ा चल रहा था उसीने इस वर्ष उत्तेजना पाई । राज्यके कर्मचारियोंका कथन था कि इस कार्यमें हिन्दू अग्रणी थे परंतु इस बातकी सत्यताका कोई प्रमाण नहीं है इतना अवश्य हुआ कि नव्वाब साहबको राजधानीमें न पाकर मुसलमानोंने हिन्दुओंपर आक्रमण किया किन्तु नव्वाबने आकर उनको शांत करनेके साथही हिन्दुओंकी रक्षा की । उसी वर्ष मुलतानमें भी हिन्दू मुसलमानोंके गोमांसके विषयमें लड़ाई होउठी । वहांके हिन्दू मंदिरोंके मीनारके विषयमें दोनों जातोंकी बहुत कालसे खटपटथी । दोनोंही उसपर अपना २ दावा बतलाते थे । इस अवसरमें एक कसाईने सरकारी नियमोंका भंगकर हिन्दुओंका चित्त दुखाने के लिये सरे बाजार गोमांस बेचना आरंभ किया । इसपर हिन्दुओंने न्यायकी भिक्षा मांगकर हड़ताल डालदी । और एक सभा इकट्ठी कर इस बातके लिये डिपुटी कमिश्नर से प्रार्थनाकी परंतु उन्होंने उनकी कुछभी न सुनी । फिर उन्होंने वाइसराय की सेवामें निवेदन पत्रभेजा परंतु वहांसे उत्तर आने पूर्वही हुल्लड होगया । हिन्दुओंने मसजिदों पर और मुसलमानोंने बाजार पर आक्रमण किया । नगरमें आग लगादीगई और जिस मंदिरके विषयमें झगड़ाथा उसे मुसलमानोंनें नष्ट करडाला। दोनों पक्षोंकी खूब लड़ाई हुई। अंतमें सरकारीसेनाने आकर शांतिकी। गवर्नरने मंदिरके अभियोगमें हिन्दुओंको झूठा बतलाकर स्थानीय अफसरोंका फैसला बहाले रक्खा और झगड़ेका दोष हिन्दुओंपर डालागया ॥

ब्रिटिशराज्यमें हिन्दू मुसलमानोंका परस्पर विरोध होकर लड़ाई होनेका यह पहलाही अवसर था।इसके बाद गोबध आदिके विषयमें अनेक जगह अनेक बार

लड़ाइयां हुई और उनमें प्रायः मुसलमानोंही का पक्ष कियागया किन्तु ये बातें छोटी मोटी हैं। इसविषयमें यहां लिखनेका स्थान नहीं है। हिन्दू लोगभी वास्तवमें गोरक्षा किस प्रकारसे करनाचाहिये इस बातको नहीं जानतेहैं और समयका विचार न कर लड़पडतेहैं और मुसलमानभी अपने हिन्दूभाइयोंके दुःखकी क़दर नहीं करतेहैं। बसदोनों हाथों से ताली बजतीहै किन्तु हर्षहै कि गवर्नमेंटकी सुनीति और दोनो जातिके मुखियाओंकी बुद्धिमानीसे, अब इसप्रकारके बखेड़े नहीं उठते हैं और दोनोंमें प्रेम बढ़ता जाता है ॥

अध्याय ४८.

मिसरम अंगरेजी राज्य।

सन् १८८२ई० में मिसरके साथ इंग्लैंडका दृढ संबंध होगया। अरबी पाशा नामक उमराव मिसरराज्यके युद्धविभागका मंत्री हुआ। उसके नियत होतेही विलायतके " टाइम्स " संवाद पत्रमें मिसरकी स्थितिके विषयमें अरबी पाशाका एक लेख प्रकाशित हुआ। प्रथम यह पत्र कल्पित समझागया था किन्तु पीछेसे इसकी सत्यता सिद्ध होगई। इसमें लिखाथा कि " मैं मिसरका वास्तविक प्रतिनिधिहूं। मेरी सेनापर प्रजाका विश्वास है। बड़े २ वेतन पानेवाले अल्प योग्यताके यूरोपियन कर्मचारियोंसे मिसर बहुत पीडितहै। धनसंबंधी प्रबंधके विषय में यूरोपियन राजनीति कैसी भी क्यों नहो किन्तु मिसर राज्यके बड़े २ पद मिसरियोंको देना चाहिये। क्योंकि मिसर मिसर वालोंके लियेहै, यूरोपियन लोगोंके लिये नहीं है.। " इस बातको उसने खेदीवके प्रतिनिधि बनकर प्रकाशित किया इसलिये यूरोपियन राजनीतिज्ञ लोगों में इसपर बड़ा आन्दोलन हुआ। इस प्रश्नके निराकरणके लिये इंग्लैंड और फ्रांसने मिलकर अन्य बड़े २ राज्योंकी सम्मतिसे मिसरके खेदीवके नाम एक पत्रभेजा। इसमें लिखागयाकि "हमारे संयुक्त अधिकार रखनेसे मिसरका लाभ, यूरोपमें शांति और मिसरकी ऋणदेने वालोंसे रक्षा होगी।" इस बातको खेदीवने स्वीकार किया और मिसरकी प्रजाकी सम्मति नहोनेपरभी रूमके सुलतानने इसका अनुमोदन किया। सुलताननने मिसरको अपने राज्यका एक भाग मानकर यूरोपियन राज्योंके उसपर हस्ताक्षेप करनेको नापसंद किया। वहांके प्रधान अमात्य शेरिफ पाशा ने सेना और उसका वेतन बढ़ाकर शांति करनेका प्रयत्न किया किन्तु राजसभाने स्पष्ट कह दिया कि जबतक फ्रांस और इंग्लैंडका संयुक्त अधिकार रहेगा हमसे काम

न चल सकेगा। इतना कहकर मिसरकी मंत्रिसभाने अपना पद त्याग दिया और महमूद पाशा अमात्य हुए। इस अवसरमें फ्रांसका प्रधान मंडल टूटगया और इस कारण संयुक्त राज्योंका बल घटा हुआ देखकर मिसरने बल पकड़ा। अरबीपाशाका सुलतानसे मेल था इसलिये ख़ेदीव उसका कुछ कर नहीं सकते थे। राज्यका बाजट फ्रांस और इंग्लैंडकी सम्मतिसे तैयार किया जाता था। अरबी पाशाकी प्रेरणासे वहांकी राजसभाने इस बार दोनों राज्योंसे इस विषयमें कुछ पूंछपांछ नकी। दोनोंने इस बातका ख़ेदीवसे कारण पूंछा परंतु इस बातपर भी कुछ ध्यान न दिया गया। इसी अवसरमें अरबी पाशाके बध करनेके प्रयत्नके विषयमें (नमालूम सच्ची वा झूंठी) चर्चा हुई। अपराधियोंको दंड देनेके विषयमें ख़ेदीव और राजसभा का मत भेद होगया। सर एडवर्ड मेलेटकी सम्मतिसे ख़ेदीवने अपराधियोंको दंड देनेका निषेध किया। उसी समयसे ख़ेदीवका राज सभासे विरोध होगया। ख़ेदीवके अधिकारकी रक्षाके लिये इंग्लैंड और फ्रांसने सेना भेजी जो एलेक्ज़ेंड्रिया आपहुंची। संयुक्त सेनाके आनेसे मिसरमें और भी हलचल मचगई। यूरोपियन लोगोंको प्राण रक्षाका भय हुआ। अरबीपाशा और सेनाका बल बढ़गया। उसने एलेक्ज़ेंड्रियाका क़िला दृढ़कर सामुद्रिक किनारेपर सेना रखदी परंतु इस अवसरमें उसके पक्षवालोंमें फूट पड़गई। वे अरबी पाशाके अधिकारसे निकलकर यूरोपियन लोगों और ब्रिटिश दूत मिस्टर कुक्शनको गाड़ीमें से नीचे डालकर मारनेमें तत्पर हुए। इसी तरह उन्होंने यूनानके दूत और कई एक अंगरेज़ तथा फ़रांसीसियोंको मारडाला। यूरोपियन लोग अपने २ प्राण लेकर भागे और व्यापार बंद होगया। अंतमें एडमिरल सीमोरने अरबीको नोटिस दिया कि "युद्धकी तैयारी बंदकर तीन दिनमें समस्त क़िले हमें सौंपदो" परंतु इसपर उसने कुछ भी ध्यान न दिया तब सीमोर साहबने किले पर तोपें दागना आरंभ किया। और फ्रांसने ऐन समयमें सेनासे कुछ सहायता न की। इसका परिणाम यह हुआ कि अकेली अंगरेज़ी सेनाको मिसरी अरबी पाशासे लड़ना पड़ा॥

अरबी पाशा थोड़ी देर लड़नेके अनंतर सेना सहित भागा। इसके बाद इंग्लैंड और भारत वर्षसे बहुतसी सेना भेजी गई। कई एक लड़ाइयोंके बाद अरबी की हार हुई। और ख़ेदीवने उपद्रवियोंको पकड़ २ कर दंडदेनेका प्रयत्न किया। इस पर गवर्नमेंट प्रसन्न होगई। उसने अरबीको पकड़कर आजीवन सीलोनमें कैद किया। और मिसरमें अंगरेज़ीकी रक्षामें ख़ेदीवका राज्य स्थापित हुआ। इस बातका लार्ड डफ़रिनने मिसर जाकर निर्णय किया॥

एडमिरल सीमोरकी सहायताके लिये इंग्लैंडसे जो सेनागई उसके मुख्य अध्यक्ष जनरल उलजली और उनके सहकारी महारानीके पुत्र श्रीमान् डयूक आफ़ केनाट थे। युद्धमें डयूकने अनेक बार अच्छी बीरता दिखाई और एकबार जिससमय शत्रुकी सेनाने अंगरेज़ोंकी रेल्वेट्रेन जलानेके लिये आग लगादी तब आपने सेना और युद्धकी सामग्री बचाने के लिये गाड़ीके अपना कंधालगाकर उसे जलनेसे बचाया। इस बातके लिये उनकी बहुत कुछ प्रशंसा हुई और जबतक वह समर भूमिमें रहे श्रीमती उनकी प्रसन्नताके नित्य तार मंगवाकर बड़े उत्साहके साथ सुनती रहीं और जब २ उनको अपने पुत्रकी वीरताके समाचार सुनपड़े तबही तब आपने विशेष प्रकारका हर्ष किया। और जिस समय मिसरका विजयकर सेना इंग्लैंडको गई महारानीने उसके अफसरोंको अपने हाथसे तमगे पहनाने। तमगे पहनाते समय जब डयूक आफ़ केनाटकी पारी आई तब आपने पुत्रस्नेहमें विह्वलहोकर डयूकका चुंबन करालिया। इधर मिसर विजयहोनेसे वहांके निवासियोंको बहुत हर्षहुआ और उन्होंने मसजिदोंमें नमाज पढ़ते समय कहा कि इंग्लैंडकी रानी न्यायका आदर्श है॥

अध्याय ४९.

भारतवासियोंको स्थानीयप्रबंधमें अधिकार।

शिक्षा कमीशन।

सन् १८८२ ई० में लार्ड रिपनने भारतवासियोंको स्थानीय प्रबंध स्वयं करनेका स्वत्वप्रदानकिया। भारत गवर्नमेंटके ऊपरसे द्रव्य का बोझा कम करनेके लिये प्रान्तीय गवर्नमेंटोंको अपना प्रबंध स्वयं करनेका जो अधिकार पहले मिलचुकाथा उसीका यह परिणाम है। इसनीतिका प्रयोजन केवल यही न था कि प्रबंधका सुधार होजाय किन्तु गवर्नमेंटकी इच्छाथी कि भारतवासी अपना प्रबंध आप (Local Self Govrnment) करना सीखैं। इस कार्यमें सफलता प्राप्त करनेके लिये सरकारने प्रत्येक स्थानकी म्यूनिसिपेलिटियोंको नियत कर प्रान्तीय गवर्नमेंटके नियत किये फंडोंका प्रबंध उसको सौंपागया। इसके साथही बड़ी २ कार्पोरेशनोंको शिक्षा, स्थानादिका निर्माण और इसी प्रकारके अन्य छोटे मोटे कामोंकी जांच और प्रबंध भी दिया गया। इन सभाओंमें मेंबरोंके वर करनेकी प्रणाली स्थापित हुई। किन्तु मेंबर चुननेका अधिकार सर्वत्रकी म्यूनिसिपेलिटियोंमें

प्रचलित न कियागया बरन जो इस कार्यके अयोग्य जिले थे उन्हें इस तरहका स्वत्व प्रदान करनेका स्थानीय गवर्नमेंटोंको अधिकार मिला । बंबईके गवर्नर सर जेम्स फर्ग्युसन ने भारत गवर्नमेंटकी इस योजनाका विरोध किया । और कहाकि प्रजा वर्गमेंसे सरकारके, विना नौकरोंको चुननेका अधिकार देना अनुचित है परंतु पीछेसे उन्होंने अपना विरोध बंदकर भारत गवर्नमेंटकी योजनाको स्वीकार करलिया ॥

इसी आईनके अनुसार लोकल बोर्डों और म्यूनिसिपेलिटियोंमें प्रजाको प्रतिनिधि चुननेका अधिकार मिला है किन्तु इनका सभापति सरकारी हाकिम होता है इस लिये उसकी सम्मति और दबावमें पड़कर देशी मेंबर प्रजाका वास्तविक लाभ नहीं कर सकते और उपकारके बदले प्रायः इन सभाओंसे अपकार होताहै।

इसी वर्षमें भारत गवर्नमेंटकी शिक्षा संबंधी नीतिकी जांच करनेके लिये कमीशन नियत हुआ । सन् १८५४ ई० में ईस्ट इंडिया कंपनीने भारतकी प्रजाके लिये जिस प्रकारकी शिक्षा प्रणाली स्थापित की थी उसका वर्त्ताव कहांतक होताहै इसी बातकी जाँच की गई । कमीशनने भिन्न २ प्रान्तोंके देशी और यूरोपियन मिलाकर २० सभासद और सर डबल्यू डबल्यू हंटर सभापति नियत हुए। इस कमीशनने देशका दौराकर रिपोर्टकी किन्तु इससे प्रजाको कुछ भी लाभ न हुआ । इसी वर्षमें पंजाबका विश्वविद्यालय स्थापित हुआ ॥

अध्याय ५०.

इलवर्ट बिलपर आन्दोलन।

लार्ड रिपनका सत्कार ।

सन् १८८३ ई० में "इलबर्ट बिल" के विषयमें बहुत बड़ा आन्दोलन हुआ इससे केवल भारतवर्षमें ही क्यों बरन् यूरोपमें भी बहुत वादानुवाद हुआ । इस बिलका मुख्य उद्देश्य उन फौजदारी अभियोगोंके नियम परिवर्तन करनेका था जिनमें वादी और प्रतिवादी अथवा दोनोंमें से एक यूरोपियन हो।इस पांडुलिपिको वाइसराय लार्ड रिपनकी व्यवस्थापक सभामें उपस्थित करनेवाले मिसर इलबर्टथे इसलिये उन्हींके नामसे यह प्रसिद्ध है।उन्होंने ३० जनवरीको इस आईनका चिट्ठा व्यवस्थापक सभामें उपस्थित किया । जिसका आशय यहहै कि प्रान्तीय गवर्नमेंटोंके साथ परामर्शकर भारत गवर्नमेंटने निश्चय किया है कि यूरोपियन

प्रजाकी जाँच का देशी मैजिस्ट्रेटोंको अधिकार न होनेकी जो कलमहै उसे निकाल देनेका अब समय आपहुंचा है इस लिये जाति भेद के कारण देशियोंको न्यायसे अलग रखनेका कार्य उठा दिया जावे और केवल यूरोपियन लोगोंको इसकार्यका चार्ज देनेके बदले भिन्न २ जाति के लोगोंको अधिकार दिया जावै और देशी वा यूरोपियन जज और मैजिस्ट्रेट जाति भेद बिना अभियोग सुनसकैं तथा किसी ज़िलेका सेशन जज देशी हो और वहां यूरोपियन अपराधी का अभियोग उपस्थित होनेका अवसर आवै तो वह अभियोग दूसरे ज़िलेको न बदला जावै किन्तु देशी जजही उसकी जांचकरै। सन्१८६०ई०तक बेरोकटोक जिले के न्यायालयोंमें यूरोपियन अपराधियों के अभियोग सुनेजाते थे और नियमानुसार उनपर दंड भी होताथा किन्तु दंडमें उनके साथ कुछ रियाअत अवश्यथी। सन् १८७२ ई० में जब फ़ौजदारी न्यायालयोंके नियमोंका संशोधन कियागया तो प्रत्येक ज़िले में यूरोपियन लोगोंकी संख्या बढ़गई थी । इस कारण यूरोपियन जजों और मैजिस्ट्रेटों के समक्ष उपस्थित होनेवाले घटिया अभियोगोंमें ज्यूरीकी प्रणाली उठादी गई थी। सन् १८८२ ई० में जातिभेद निकाल देनेका नियम उठा देनेकी सूचना हुई । यह प्रस्ताव एक देशी सभासदकी ओरसे हुआ था किन्तु बात बहुत आवश्यक थी इसलिये गवर्नमेंट ने इसपर ध्यान दिया । इसी वर्ष में विलायत की सिविल सर्विस परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवाले बाबू बी.एल गुप्त ने बंगालके लेफ्टिनेंट गवर्नरको पत्र लिखा कि जब मैं कलकत्तेकी पुलिसकोर्ट का चीफ प्रेसीडेंसी मैजिस्ट्रेट था तब यूरोपियन अपराधियोंके अभियोग सुनसकता था किन्तु मेरी बाहर बदली होतेही मेरा यह अधिकार क्यों जातारहा । इस अर्ज़ीको उचित समझ कर लेफ्टिनेंट गवर्नर सर ऐशली ईडनने भारतगवर्नमेंटसे जातिभेद उठा देनेका अनुरोध किया । और लार्ड रिपनने प्रान्तीय गवर्नमेंटोंकी सम्मति से इसप्रकारका आईन बनाना चाहा किन्तु यावत् यूरोपियन कर्मचारी इसके विरोधी होगये । इधर देशी इसनियमका संशोधन करनेके पक्षमें हुए। यूरोपियन लोगोंकी वाईसरायपर इतनी अप्रसन्नता हुई कि उन्होंने लार्ड रिपनके साथ सब प्रकार का व्यवहार बंद कर दिया । और जब वह नवंबरमें शिमलेसे कलकत्ते गये तो उन्हों ने प्रकटमें लाटसाहबका अपमान किया। अंगरेज़ वालंटियरोंने उनके महलपर आक्रमण करनेकी धमकी दी किन्तु उन्होंने किसीप्रकार के विरोधकी परवाह न कर उस बिलको आईन बनादिया। परन्तु उनको इसमें थोड़ा संशोधन अवश्य करना पड़ा ॥

म्यूनिसिपेलिटियों और लोकलबोर्डोंमें देशियोंको मेम्बर चुननेका अधिकार देने और इलबर्ट बिलमें प्रजाका पक्ष करने आदि अनेक सुकार्योंसे भारतकी देशी प्रजाकी लार्डरिपनपर भक्ति बढ़गई और उसने श्रीमान्के भारतसे विदाहोते समय आपका असाधारण सम्मान किया । यह सम्मान किसीके दबाव वा अफसरोंकी प्रेरणासे नथा । क्योंकि सरकारी यूरोपियन कर्मचारी "इलबर्ट बिल" के कारण श्रीमान्से अप्रसन्न होगयेथे । इस सम्मानसे यह स्पष्ट प्रमाणित होताहै कि, भारतवर्षकी प्रजा अपने उपकारका सच्चासत्कार करना जानती है । लार्ड रिपनने प्रजाका जैसा उपकार कियाथा उसे देखते हुए देशकीप्रजाने कुछभी अधिक नहीं किया । भारतकी शिल्पोन्नति के लिये उन्होंने देशमें एक प्रदर्शिनी खोलीथी । इनके शासनमें इलबर्ट बिल और म्यूनिसिपेलिटियों तथा लोकलबोर्डोंमें प्रजाको मेंबर चुननेका अधिकार मिलनेके सिवाय लवणकर घटायागया था । यह भारतवर्षके वेतनमेंसे एक पाईभी अपने कामोंमें खर्च नहीं करतथे किन्तु जो कुछ इन्हें मिलता वह धर्मकार्योंमें चलाजाता और इनका निजखर्च बिलायत की जागीरसे होताथा ॥

अध्याय ५१.

रूस का भारतपर दांत औंर अमीरसे भेट ।

लेडीडफरिन् फंड ।

रूस भारतवर्षपर बहुत वर्षोंसे दांत गाड़े हुएहै । वह इसीलिये शनैः २ मध्य-एशियामें अपना पैर फैलाता जाता है । सन्१८८४ ई०में उसने मर्व और उसके आस पासका उपजाऊ प्रदेश लेकर गवर्नमेंटके चित्तमें चिन्ता उत्पन्न की थी। वहांके तुर्कोंने रूससे यह प्रार्थना की थी कि, यह प्रदेश हमें दिलवा दो, परंतु यह प्रकट नहीं हुआ कि, परस्पर की लड़ाईसे तुर्क लोग निर्बल पड़कर अपना प्रबंध स्वयं करनेमें अशक्त थे इस लिये उन्होंने इस कार्यमें रूससे सहायता मांगी थी अथवा और कोई कारण था । कुछ भी हो परंतु इतना निश्चय है कि, प्रचलित संधिपर कुछ ध्यान न देकर उसने भारत की ओर पैर बढ़ाया । इस विषयमें पार्लियामेंटमें बहुत वादानुवाद हुआ परंतु रूसकी नीतिके विषयमें कुछ भी निर्णय न हो सका ॥

इसी वर्षमें काबुलके अमीर अब्दुल रहमान खांसे भारतके वाइसराय लार्ड डफरिनने रावलपिंडीमें बहुत ठाठके साथ भेंट की । इस भेंटके समय जो

दर्बार हुआ उसमें कवाइदके लिये १० हजार सैनिक इकट्ठे हुए थे । जिस समय अमीर लाट साहबसे मिलने भारतवर्षमें आये रूसने अफगान सीमाके पंजदेहपर आक्रमण किया था । अंगरेज लोग पंजदेहको काबुल राज्यका एक भाग गिनतेथे। रूसवालोंका कथन था कि, अमीर शेरअलीके शासनमें काबुल की जो सीमाथी वही अब भी मानना चाहिये । अफ़गानिस्तान की रूसके साथ सीमा निर्द्धारित करनेके लिये जो कमीशन नियत हुआ था वह इस बातका कुछ भी निपटारा न करसका । रूसकी चालसे इंग्लैंडकी प्रजा में बहुत हलचल मचगई । और लोगोंनें इसबातके फैसलेके लिये यूरोपके बड़े २ राज्योंकी पंचायत नियत करनेका प्रस्ताव किया । रूसने इसबातको बहुत कुछ आनाकानीके पश्चात् स्वीकार किया । परंतु इसकार्यके सफलहोनेमें अनेक विघ्न डाले । अंगरेज़ोंने कहा कि, यदि रूस, ज़ुलफ़िक़ारको छोड़दे तो काबुल पंजदेह देदेगा । रूसने इसबातको स्वीकार तो किया परंतु ज़ुलफ़िक़ारके उत्तर ओरके मार्गको अपने अधिकारमें रक्खा । रूसकी चालसे नोटोंके भाव बहुत उतरगये । और अंगरेज़ी व्यापारको बड़ा धक्का पहुँचा ॥

सन् १८८५ ई० में लार्ड डफरिनकी लेडीसाहिबाने भारतवर्षकी स्त्रियोंकी चिकित्सा और उन्हें डाक्टरी सिखानेके लिये लेडी डफरिन फण्ड स्थापितकर देशीस्त्रियोंका बहुत उपकार किया। इस फण्ड में अर्द्ध सरकारी प्रेरणासे देशके राजा महाराजाओंने बहुत रुपया दिया। और फण्ड में रुपया देनेवालोंने सरकारसे उपाधियां भी बहुतही पाई ॥

अध्याय ५२.

आयर्लैण्डमें हलचल ।

जिस समय इंग्लैंड और विशेषकर लण्डनमें महारानीकी दुलारी राजकुमारी बीट्रिसके विवाहका उत्सव होरहाथा एकाएक आयर्लैण्डमें राजद्रोहियोंके मंडलने तेज़ी पकड़ी । वहांके उपद्रवियोंको शान्तकरनेके लिये मिस्टर ग्लैडस्टनने 'नेशनल लीग' नामकी प्रभावशालिनी सभाके कईएक मुखियाओंको क़ैदकर रक्खा था और इनके छुटकारेके विषयमें मिस्टर पार्नेलसे सन्धिकी चर्चा होरही थी । इतनेहीमें ६ मई सन् १८८२ ई० को मिस्टर ग्लैडस्टनने आयर्लैण्डके जो नवीन लार्ड लेफ्टिनेंट अर्ले स्पेन्सरको नियत किया था उनके डबलिनमें प्रवेशकरने

का अवसर आया । सरकारको आशा थी कि, पार्नेल आदिके छुटकारे के लिये आयर्लैण्डवालोंसे जो ठहराव हुआ है उससे और वहांके भूमि सम्बन्धी आईनसे आयर्लैण्डमें शांति होजायगी, परंतु उक्त तिथिको डबलिनमें घुसते समय सरकारी बागमें अर्ल स्पेन्सर और उनके साथही लार्ड फ्रेडरिक पर किसी दुष्टने आक्रमण किया । लार्ड फ्रेडरिकने उस दुष्टपर छाता मारा । इतनेही में भीड़मेंसे दो तीन मनुष्य और आटूटे और इन दोनोंको मारकर उसी समय एक गाड़ीमें जो इनके लिये पहलेसे तैयार खड़ी थी बैठकर भागगये। इस समाचारको पातेही इंग्लैंडमें बड़ी हलचल मची । आयर्लैण्ड वालोंका दमनकरनेके लियें पार्लियामेंटके एकही अधिवेशनमें एक कठोर आईन पास हुआ। बहुत दिनोंतक पुलिस खोज करती २ हारगई परन्तु अपराधियों का कुछ पता नचला। अंतमें आगामि वर्ष की जनवरी में बीस घातक पकड़े गये । उनमें से अधिकांश मजदूर थे किन्तु उनका मुखिया जिसका नाम जेम्सकेरीथा ठेकेदारी का काम करता था । यह डबलिन म्यूनिसिपेलिटीका मेंबरभी था । यह दुष्ट वहांसे भागकर कहीं चला न गया था किन्तु भलाआदमी बनकर वहांका वहां ही बनारहा और उस सभाकी ओरसे इसीने लेडीफ्रिडरिक प्रभृतिके साथ सहानुभूति प्रकाशित करनेका प्रस्ताव किया और जब इसने पुलीसके हाथसे अपना किसी तरहसे बचाव न देखा तब इसीने सरकारको अपराधियोंका पता बतला दिया । अनुसंधानके बाद बीसमेंसे पांचपर अपराध प्रमाणित होगया । इनमेंसे तीनको फाँसीहुई और यह दक्षिण एफ्रिकामें आमरण निवास करनेके लिये भेज दिया गया । अपराधकर उसका भंडाफोर करने में यही अग्रणी था इसलिये आयर्लैंड वाले इससे अप्रसन्न थे । इसीकारण ओडोनल नामक मनुष्य इसके पीछे होलिया और मार्ग में जिससमय उसे अवसर मिला इसे मारकर यमसदनको पहुँचा दिया । इस अपराधमें ओ· डोनलको भी फाँसी हुई । न्यायाधीशने उसे फांसीदेने पूर्व अनेक तरहकी उखाड़ पछाड़ से उससे पूँछना चाहा कि तेरा " नेशललीग' से संबंध है वा नहीं परन्तु उसने मरते दमतक इसबातका रहस्य प्रकट न किया ॥

इसीतरहकी दूसरी घटना सन्‌१८८३ई० में हुई । एमेरिकाकी राजद्रोही मंडली मेंसे ओडोवन रोसा नामक मनुष्यने आयर्लैंडवालोंको सम्मतिदी कि " इंग्लैंडसे युद्धकर अपनी स्वतंत्रता ग्रहण करो। और इसकार्यके लिये लंडनके बड़े २ मकानों को जड़से उड़ाडालो और जैसेबने तैसे राजधानी निवासियों को कष्ट पहुँचाकर गवर्नमेंट को आयर्लैंडवालोंको स्वतंत्रता देनेपर बाधित करो ।" इसकी सम्मति

के अनुसार १५ मार्च सन् ८३ को लंडनके गवर्नमेंट बोर्ड और 'टाइम्स'समाचार पत्र के मकानोंको डायना माइटसे उडादेनेका प्रयत्न हुआ। इसप्रयत्नमें गवर्नमेंट बोर्ड के चूरमूर होगये किन्तु संयोगवश टाइम्सका आफिस बचगया। इसीलिये सरकारको १९ अप्रैलको केवल २ घंटेके वादानुवाद के अनंतर एक आईन पास करना पड़ा। परन्तु इस आईनसे उपद्रवियोंपर कुछभी प्रभाव नपड़ा। और सन् ८३ के अंतमें उन्होंने लंडनकी रेल्वे उडादी। इसघटनामें बिचारे बहुतसे मजदूर मारेगये। और बहुतसे घायल होगये। इसतरह लंडनके घंटाघर और हाउस आफकामन्सके विशाल भवनका कुछ भागभी नष्ट होगया। उपद्रवियोंको केवल इतनाही करनेसे संतोष न हुआ बरन उन्होंने लंडनके बडे पुल और दूसरे अनेक मकानोंको तोड़नेका यत्न किया और इस यत्नमें उनको तनिकभी विचार न आया कि गेहूंके साथ बिचारे घुन पिसे जाते हैं। इन लोगोंके इस दुष्कर्मसे अनेक निरपराध स्त्रीपुरुष और बालकोंको कष्ट भोगना पड़ा। उस समय लंडन में ऐसाकोई मनुष्य न था जिसे मरनेका भयनहो। इंग्लैंडके प्रधान अमात्य मिस्टर ग्लैडस्टन जैसे प्रजाप्रिय मनुष्यकी प्राणरक्षाके लिये भी कईएक कान्स्टेबल साथ रखने पड़ते थे। अंतमें बरमिंवाममें डाइना माइट बारूद बननेका एक कारखाना और कितनेही अपराधी पकड़े गये। अनुसंधान के पश्चात् कारखाना बंद किया गया और अपराधियोंको जीवनपर्यंत काले पानीका दंड मिला॥

इसके अनन्तर सन् १८९९ ई० के ट्रांसवाल युद्धके समय आयर्लैंड वालोंका फिर क्रोध भड़काथा। परंतु वहांकी सेनाने सर्कारकी सेवा करनेमें किसीप्रकार की न्यूनता न की और अंतमें महारानीके आयर्लैंडकी अंतिम यात्रा करनेसे उनके मुखकमलको देखतेही वहांवाले शांत होगये नहींतो उनमेंसे अनेक मनुष्य ट्रांसवालको सहायता देनेके लिये तैयार थे और इसबातके लिये डबलिनमें बहुतसी सभायेंभी हुईथीं॥

अध्याय ५३.

सौडानका युद्ध।

सौडान मिसरके राज्यका एक प्रदेश है। वहांका शासक मुहम्मदअली पाशा था। बरबर डंगोला, खार्तूम, सिनकट और रोहकटमें मिसरकी सेनाकी छावनीथी। एकाएक मिसरके युद्धके थोडेही दिनके अनंतर अर्थात् सन् ८५ ई० के लगभग महदी नामक मनुष्यने शिर उठाया और मुसलमानोंके पैगंबर होनेका दावा

किया । मिसरकी गवर्नमेंटने कर्नलहिक्सके अधिकारमें महदीका दमन करनेके लिये सेना भेजी । यह सेना काशेगटके निकट विना खाये पीये लड़ती रही । इस सेनामें जनरल गार्डनभी थे । यह वही गार्डनहैं जो पहले चीन राज्यकी सेवा करचुके थे और अब मिसर गवर्नमेंटके यहां नौकर थे । मिसरी सेनाने महदी का दमन किया और गार्डन् वहांके गवर्नर बनायेगये । इन्होंने इसपदको पाकर महदीके हाथपैरढीले करनेका बहुत कुछ प्रयत्नकिया परंतु इंग्लैंडने इनकी यथेच्छसहायतानकी इसलियेमहदीने फिर बलपकड़लिया। उससमय उनकेपास५००सिपाहीभी न थे और न रुपया था। परंतु वहअपनी बुद्धि और बलसे अपना जैसे तैसे निर्वाहकरते रहे । अंतमें इंग्लैंडकी आंखें खुलगई । गार्डनकी रक्षाके लिये वहांकी प्रजाने भरपूर चंदा दिया परंतु फिरभी सरकारने उसका विश्वास न किया । इसका परिणाम यह हुआ कि बरबर स्थानमें महदीका अधिकार होगया और ३५०० मनुष्य बालक और स्त्रियां बुरी तरहसे मारी गई । शत्रुने खार्तूमको घेरकर नगर में भोजनकी सामग्री पहुँचना बन्द कर दिया । इस अवसरमें इंग्लैंडमें मछलियों का प्रदर्शन हुआ । उस समय प्रजाने प्रधानअमात्यको सुना२कर गार्डनकी प्रशंसा और उनकी निन्दाकी। अन्तको खार्तूमकी रक्षाके लिये इंग्लैंडसे सेना बिदाहुई । इस सेनाको लेकर लार्ड उलजली सौडानको गये । इनके पहुँचने पूर्वही जनरल गार्डनेन महदीसे बरबरका किला खाली करवा लिया । गार्डनके मित्र कर्नेल स्टुआर्ट जो इनकी राहायताको बुलाये गये थे उनकी नौका धरतीसे भिड़ गई। उस समय वहांके निवासियोंने इन्हें विश्वास देकर सेनाको मिस्टर पावर सहित मार डाला । इससे महदीका साहस बढ़ गया । उसने गार्डनको घेरकर अन्न बिना मारडालनेका प्रयत्न किया । और सहायताकी सेना पहुँचते २ अपना बल खूब पक्का कर लिया । और खुब वीरता करनेके बाद गार्डन मारा गया । वह यदि चाहता तो भागकर बच सकता था परंतु उसने अपने प्राण बचाकर अपनी जातिवालोंको अग्निमें होमना न चाहा । उसने इंग्लैंडकी ढिलाई और उपेक्षासे एक वर्ष तक कष्ट पाकर ब्रिटिशके यशकी रक्षाकी परंतु अन्तमें अकेला गार्डन क्या करसकता था । उसके मारेजानेका इंग्लैंडकी प्रजाको बहुत पश्चात्ताप हुआ । और उसी समय महारानीने उसकी बहन और भाईको पत्र लिखकर अपना हार्दिक शोक प्रकाशित किया । उन्होंने उस पत्रमें लिखा कि " मुझे इस बातका अधिक खेद है कि मेरे वारम्वार आग्रह करने और ब्रिटिश राज्यके प्रण करने परभी गार्डनकी सहायताके लिये सेना न भेजीगई। मैं अच्छीतरह जानती

हूं कि यह इंग्लैंडपर भारी कलंक है "। गार्डन बड़ा वीरथा। इसके बादभी खार्तूम विजय करनेके लिये जो सेना गई थी उसके जब २ विजयकी अनीआई इंग्लैंडके मंत्रिमण्डलने टालबाज़ीमें अवसर खोदिया। अन्तमें महँदीके जनरल ओस्मान डिगमासे एलटेब और जमानीबमें अंगरेजी सेनाका युद्धहुआ। परंतु इससमय भी वही दशा हुई। इस अवसरमें कनाडा और आस्ट्रेलियासे सेना आपहुँची और भारतकी सेनाने इन सबके साथ महँदीका विजय किया। इसके उपलक्षमें महारानीने भारतीय सेनाके देशी अफसरोंको बुलाकर उनका सत्कार किया।यद्यपि सरकारीसेनाने उससमय मेहँदीका विजय कर लिया परंतु सन्९७ई० में फसैाडामें फरांसीसियोंको नीचा दिखाकर जब लार्ड किचनरने खार्तूममें प्रवेश किया तब गार्डनके मारे जानेका कलंक दूर हुआ। खार्तूममें मिसर का राज्य स्थापित कर इन्होंने इस वर्षमें गार्डनकी वहाँपर कबर बनवाई और मेहंदीकी लाशको क़बरमेंसे निकलवा कर उसे जलवा डाला॥

अध्याय ५४.

ब्रह्मदेशमें सर्कारी राज्य।

सन् १८५२ ई० में लार्ड डेलहौसी गवर्नर जनरलने ब्रह्मदेशके राजा थीवाका कुछ देश जीतनेके अनन्तर उनसे जो संधिकी थी उसका निर्वाह लार्ड डफरिनके शासन तक जैसे तैसे होता रहा। उनके समयमें राजा थीबाके लिये सरकारको विदित हुआ कि वह फरांसीसी और इटाली वालोंसे मेल बढ़ानेका यत्न कर रहे हैं। इसबातका यद्यपि कोई प्रमाण जाननेमें न आया परंतु बंबई ब्रह्मा ट्रेडिंगकंपनीने सरकारसे निवेदन किया कि थीबा हमारे व्यापारके कामोंमें विघ्न डालकर लकड़ी और चावल आदि पदार्थ हमें वहांसे लानेमें बाधाडालतेहैं और न खानोंका अन्वेषण करने देते है। यह कंपनी विलायतियों की थी। लार्ड डफरिन ने राजाको समझानेके लिये सेनाभेजी। राजाने इसपरभी कुछ ध्यान नदिया। इसपर सेनाने चढ़ाई कर वहांकी राजधानी मंडाले और आवा छीन लिया और राजाको पकड़कर भारतमें कैदकर दिया। तबहींसे ब्रह्माका राज्य सरकारी राज्यमें मिलाकर पुराने और नये राज्यका एक प्रान्त बनायागया और वहांका शासन एक चीफ कमिश्नर को सौंपागया जो अब ब्रह्मदेशके स्वतंत्र लेफ्टिनेंट गवर्नरहैं। यद्यपि ब्रह्मदेशका विजय सन् १८८६ ई० में ही होगया और लार्डडफरिनने उसे सरकारी राज्यमें मिला देनेका ढिंढोरा भी

उसी सन्में पिटवा दिया परंतु वहां चार पांच वर्षतक शांति नहुई। उसराज्य के चोर डाकू लुटेरे और दुष्ट लोगों ने खूब लूटमार मचाई और जैसे बना तैसे सरकारी सेनाको सताकर प्रबंधमें विघ्नडालना चाहा परंतु ब्रिटिश नीति और कौशलके सामने उनकी कुछ न चली और अंतको वह प्रदेश भारत के साथ ऐसा सटगया जैसे यह सदासे ही इसका एक अंगहो । शांति करनेके लिये और होनेके अनन्तर गवर्नमेंटने ब्रह्मदेशमें भारतकी प्रजाके समान वहां वालोंको स्वत्व प्रदान किये । चीफकोर्ट, स्कूल, कालेज अस्पताल स्थापित किये और रेल्वे बनवाकर उसे भारतके साथ एकमेक करडाला। थीबाके राज्यकी अव्यवस्थासे ब्रिटिश व्यवस्थाको अच्छी समझ प्रजाने सुखमाना । जिस समय ब्रह्मदेशके युद्धका व्यय भारतके राजकोषसेलेनेका सरकारने निश्चय किया इस देशकी शिक्षित प्रजाने इसका घोर प्रतिवादकर इस कार्यके लिये एक पाई देना न चाहा और कहा कि अकारण ब्रह्मदेशको ले लेनेमें अन्याय हुआहै और उस देशसे भारतको प्रकटमें कुछ लाभ भी नहीं है इसलिये हमसे इसका व्यय लेना योग्य नहीं है परंतु सरकारने उस प्रदेशको भारतमें मिलानाही योग्य समझा इसलिये सारा खर्चा इस देशसे लिया गया ॥

अध्याय ५५.

ट्रांसवालसे इंग्लैंडके युद्ध ।

सन् १८९६ई० का आरंभ होतेही ट्रांसवालमें नया बखेड़ा खड़ा हुआ। जनवरीको मशोनालैंडके प्रबंधक डाक्टर जेम्सन शस्त्रधारी सेना लेकर ट्रांसवाल राज्यमें घुसपड़े । जोहोनिसबर्ग नगरके परदेशी मुखियाओंने डाक्टरको मैफकिंगमें लिखकर भेजा कि ट्रांसवाल राज्यके प्रबंधमें गड़बड़ है इसलिये शीघ्रही परदेशियोंसे ट्रांसवालकी गवर्नमेंटका संग्राम होनेवाला है । उस पत्रमें यह भी लिखा था कि युद्धके समय हम लोगोंको बाल बच्चों सहित बोर राज्यकी शरण लेनी पड़ैगी । और हमारा माल असबाब नष्ट होजायगा । इस पत्रपर हस्ताक्षर करनेवालोंकी इच्छा यह थी कि, डाक्टर साहब यहां आकर हमारे स्वत्वोंकी रक्षाकरें और इस तरह देशको रक्तकी नदी बहनेसे बचावें। इस कार्यके लिये उन्होंने खर्चेका बोझा अपने ऊपर लिया । इस पत्रको पातेही डाक्टर जेम्सन सातसौ सैनिकों सहित ट्रांसवालको गये। इसपर वहांके प्रेसीडेंट क्रुगरने केप

टौनके लार्ड कमिश्नरको पत्र लिखकर उनसे पूंछा कि डाक्टर जेम्सन आपकी आज्ञासे हमारे राज्यमें आये हैं अथवा मनमानी करते हैं। इसके उत्तरमें उन्होंने लिखा कि मुझे अबतक इस बातकी कुछ खबर नहीं है। यदि सत्यहै तो इस बातके उत्तरदाता डाक्टर जेम्सनही हैं क्योंकि उन्होंने यह कार्य अपनी इच्छासे किया है। उन्होंने साथही डाक्टरको भी तार दिया परंतु जब इसका उत्तर न आया तब उनको निश्चय होगया कि मार्गके तार काट डाले गये हैं। इस पर उन्होंने प्रेसीडेंट क्रूगरको फिर लिखा कि आप डाक्टरको लौटादें और किसी तरहकी लड़ाई न होने पावै। लोग कहते हैं कि लार्ड कमिश्नरका तार डाक्टर जेम्सनके पास पहुंच गया था परंतु उन्होंने उसपर कुछ ध्यान न दिया और लड़नेको उतारू होगये। बोर सेनाने डाक्टरका सामना कर उसे मार भगाया और क्रूगर्स डार्पमें जाकर घेरलिया। जेम्सन पहले तो बहुत दृढतासे लड़ता रहा परंतु जोहोनिस्वर्गके परदेशियोंकी ओरसे ठहरावके अनुसार जब सहायता न मिलती दीखी तब उसे लाचार होकर अपनी सेना सहित बोरोंकी शरण जानापड़ा। इंग्लैंडमें उपनिवेश विभागके मंत्री मिस्टर चेम्बरलेनने सर हरक्यूलस रोबिन्सनको पत्र लिखकर जेम्सन साहबकी अनीति पर बड़ा खेद प्रकट किया और लिखा कि कैदियोंके साथ वर्त्ताव अच्छा होना चाहिये। प्रेसीडेंट क्रूगरने आग्रहपूर्वक डाक्टर जेम्सन और उनके साथियोंको कैद कर इंग्लैंड भेजदिया। इस बातके समाचार पातेही मिस्टर चेम्बरलेनने फिर सर हरक्यूलस रोबिन्स को तारदिया कि आपने कैदियों को हमें देदेनेका जो फैसला किया है उससे महारानीको बड़ा संतोष है। इससे आपकी बड़ी प्रशंसा है। यह कार्य ट्रांसवालमें शांति स्थापन करनेकाहै। ब्रिटिश और डच जातिमें परस्पर स्नेह रहना दोनोंके लिये अच्छा है। इसी विषयमें प्रेसीडेंट क्रूगर और उपनिवेश विभागके मंत्रीके परस्पर बहुत कालतक पत्र व्यवहार होता रहा और इसका परिणाम यह हुआ कि ट्रांसवालमें व्यापार करने वाले यूटलैंडर लोगों के स्वत्वोंके विषयमें प्रेसीडेंट क्रूगरने योग्य निपटारा करदिया। इस छोटीसी लड़ाईमें डाक्टरकी सेनाके अनुमान सत्तर मनुष्य मारेगये वा घायल हुए। डाक्टर साहबके कैदी बनकर इंग्लैंड पहुंचनेके अनन्तर सैनिक न्यायालयने उनके अपराधकी जांचकर उन्हें दोवर्षका कारागार वास दिया। और उनके साथियों को भी अपराधके अनुसार कैद रक्खा गया परंतु डाक्टर का स्वास्थ्य बिगड़ गया था इसलिये उनका अवधि बीतने पूर्वेही छुटकारा होगया॥

परंतु ट्रांसवालका इंग्लैंडसे इसप्रकारका मेल अधिक कालतक न रहने पाया। दो वर्षके बादही दोनों में परस्परका फिर झगड़ा खड़ा होगया । ट्रांसवालने ब्रिटिश आधिपत्यको अस्वीकार कर वहां व्यापार करने वाले परदेशियोंको वहांकी पार्लियामेंटमें मेंबरचुननेका इच्छित स्वत्व न देना चाहा और न खानें खोदनेके लिये डाइना माइट बारूदका लाइसैंस दिया । इसीप्रकारके अनेक कारणोंसे इंग्लैंडको ट्रांसवालपर फिर चढ़ाई करनी पड़ी । इंग्लैंडके उपनिवेश विभागके मंत्री मिस्टर चेम्बरलेन इधरतो प्रेसीडेंट क्रूगरसे संधिका प्रस्ताव कर उन्हें दबानेके लिये युद्धसंबंधी अंतिम पत्र (अल्टीमेटम) देते और उधर शनैः २ सरकारी सीमापर सेना बढ़ाने लगे। इस कार्यसे ट्रांसवाल राज्यको निश्चय होगया कि अपना बल दृढ कर हमारा देश छीनलेनेके लिये मिस्टर चेम्बरलेन चाल चल रहेहैं । इसलिये प्रेसीडेंट क्रूगरने एकाएक सरकारी सेनाके प्रधान अध्यक्षको २४ घंटेकी अवधिका अल्टीमेटम दे दिया। बोरोंसे लड़नेके लिये अंगरेजी सेना थोड़ी थी । इंग्लैंडसे सहायता पहुंचने में अभी बहुत देरी थी इसलिये लाचार होकर अंगरेज़ी सेनाको ११ अक्टूबर सन् १८९९ ई०को भागकर लेडीस्मिथ, किम्बर्ली और मैंफकिंगके किलेमें शरण लेनी पड़ी । बस उसी दिनसे लड़ाई ठनगई । भारत-वर्ष, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया और केनाडासे सेनाके भरे जहाज़पर जहाज़ जाने लगे। चाहे अंगरेज लोग उस देशमें बहुत वर्षोंसे आते जाते थे परंतु फिर भी वहां की भूमि इनकी परिचित न थी, बोरोंको अंगुल २ धरती मालूम थी, बोर लड़नेमें बड़े कुशल थे और अंगरेज़ी सेना युद्धशिक्षामें प्रवीण होनेपर भी बहुत अच्छी न थी। इन कारणोंसे बोरोंने अंगरेज़ी सेनाके दांत खट्टे कर दिये। क़िलेके भीतर जो लोग घिरे हुएथे उन्हें अन्नके अभावसे घोड़े काट २ कर खाने पड़े और जो सेना उनके छुटकारे के लिये गई थी उसे अनेक जगह और अनेक बार बोरोंसे हार खाकर अपने हज़ारों मनुष्य खोने पड़े । अंतमें सरकारने भारतके भूतपूर्व प्रधान सेनापति लार्ड राबर्ट्स और जनरल किचनरको बहुतसी सेना सहित भेजा। इनकी योग्य व्यवस्था और थोड़े बोरोंको पराजय करनेके लिये असंख्य अंगरेजी सेना पहुंच जाने बाद तीनों किलोंका छुटकारा हुआ । पैंड२पर लड़ २ कर हारनेके अनन्तर बोरोंने अपने मित्र राज्य ओरेंजफ्रीस्टेट और ट्रांसवा-लकी राजधानी प्रिटोरियाको छोड़ दिया। लार्ड राबर्ट्सने उनका राज्य छीनकर वहां विजयी ब्रिटिशका झंडा जा खड़ा किया । घरबार, राज्य और बालबच्चे छूट जानेपर भी बोरोंने अबतक लड़ना नहीं छोड़ा है और अनुमान है कि ट्रांसवाल तथा ओरेंज फ्रीस्टेटका राज्य अंगरेज़ोंके हाथ आजानेपर भी वहां अनेक वर्षों-

तक शांतिं होना कठिन है । बोर लोग वास्तवमें बीर हैं । तबही उन्होंने एक ऐसी जातिका सामना किया है जिसकी बुद्धि और बलको देखकर आज कल बड़े २ राज्योंके छक्के छूटते हैं । परंतु बोरोंकी दृढता और बीरताकी संसारमें प्रशंसा है । वे स्वतंत्र हैं और अपनी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिये मरते दमतक लड़नेको तैयार हैं । उनके अगुआ मिस्टर क्रूगर देश छोड़कर विदेश चले गये हैं, बीर जूबर्ट जैसा प्रसिद्ध सेनापति मरगया है, जनरल क्रोंजी अपने चार हजार सैनिको सहित सेंट हेलेनाके टापूमें क़ैद हैं और हज़ारों बार सैनिक मारे गये, घायल हुए वा अंगरेज़ोंकी कैद तथा शरणमें आचुके हैं परंतु वे लोग अभीतक लड़रहे हैं और फिर भी लड़ैंगे । दोनों राज्य सरकारके हाथमें आजाने पर भी वहांका युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है । पौने दो वर्षकी लड़ाई का संक्षिप्त २ वृत्तान्त लिखना भी इस पुस्तकमें नहीं बन सकता है । और यह विषय अभीतक पाठकोंकी दृष्टिमें नया बना हुआ है इस लिये मैं इसका विस्तार करना नहीं चाहताहूं ॥

यद्यपि भारत वर्षमें देशव्यापी अकाल विद्यमान था यहां की भूखी प्रजाके साठ पैंसठ लाख मनुष्य सरकार की दी हुई रोटियोंसे अपना पेट पालतेथे परंतु अपने स्वामीका संकट देखकर भारतवर्ष अपनादुःख भूलगया । इसने जी खोलकर सेना, द्रव्य और सामग्री देकर सरकारकी सहायताकी । सरकारने इसबातके लिये भारत वर्षकी प्रजा और राजाओंका उपकार माना और लार्ड कर्जन (वाइसराय) और लार्ड ज्यार्ज हैमिल्टन (भारतके स्टेट सेक्रेटरी) ने इस पर अंतःकरण से धन्यवाद दिया और महारानीने राजा प्रजाकी बहुत प्रशंसाकी ॥

अध्याय ५६.

अशांति का उपद्रव ।

जिससमय ट्रांसवालमें डाक्टर जेम्सनका बखेड़ा उठरहाथा अशांतिमें एका एक उपद्रवकी आग भडकी । सन् ९४ई०में कुमासीका राजा अशांति का राजा बन बैठा था । अवसर पाकर फरांसीसी एजेंटने कुमासी और अशांतिमें फ्रांसका आधिपत्य स्थिर करनेके लिये राजाको बँहका दिया । इसपर अंगरेज़ी दूतने राजासे कहा कि जो कुछ युद्धव्ययका रुपया आपपर हमारा लेना है उसे शीघ्र देडालो । राजाको अंगरेज़ोंकी परराज्योंको दबाकर छीनलेनेकी नीति पसंद न

आई। अंतमें बखेड़ा यहांतक बढ़ा कि ३१ दिसंबर सन् १८९५ ई० को राजाके नाम इंग्लैंडने एक अल्टीमेटम भेजकर उसमें लिखाकि हम कुमासीमें अपना कमिश्नर नियतकर अशांतिको सरकारी आधिपत्यमें लेना चाहते हैं । उसमें यह भी लिखा गया कि सरकार दासव्यापारको बंद करदेगी और इस राज्यके आस पास बसने वाली जातियोंका दमनभी करैगी। इसपत्रका राजाने कुछभी उत्तर न दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि सरकारको सर फ्रांसिस स्काटके अधिकारमें राजासे लड़ने के लिये सेना भेजनी पड़ी। इसयुद्धमें महारानीकी दुलारी पुत्री राजकुमारी बियाट्रिसके पति राजकुमार हेनरी आफ बेटनवर्गका कुमासी पहुंचनेसे पूर्व ही ज्वरसे मार्गमें देहान्तहोगया । इस दुर्घटनासे महारानीको जो शोक हुआ उसका उल्लेख प्रथमभागमें किया गया है। सर फ्रांसिस स्काटको राजासे बिलकुल युद्ध न करना पड़ा । महारानीकी विजयिनी ध्वजा देखकर राजाके औसान बिगड़गये । राजा प्रेम्पेहने सरकारी समस्त शर्तोंको स्वीकार करलिया । इसबातसे गोल्ड कोस्टके निवासियोंको हर्षहुआ । सर फ्रांसिस स्काट बेधड़क कुमासीमें जा घुसे॥

इसके अनंतर महारानीके शासनके अन्तिम वर्षमें भी अशांति उत्पन्न हुई थी परंतु इसका परिणाम वही हुआ जो उक्तयुद्धका हुआ था । सरकारी सेनाने वहां जाकर उपद्रवियोंका दमन कर दिया । इस युद्धका विषय अभीतक पाठकोंके चित्तसे हटा नहीं है । वे लोग ' श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार ' में इस विषयके साप्ताहिक समाचारोंको पढ़ते जाते हैं इसलिये यहांपर उनका विस्तार नहीं किया गया है ॥

अध्याय ८७.

भारतवर्षके देशी रजवाड़े ।

विदेशकी विशेष २ घटनाओंको लिखते २ मैं सन् ९९–१९०१ ई० तक चला आया परंतु सन् १८९१ ई० की एक आवश्यक घटना लिखनेका मुझे समय न मिला। वह यही है कि सन् १८९१ ई० में आसामके निकट मनीपुर नामक सरकारके आश्रित राज्यमें वहांके अमात्य और सेनापति टिकेन्द्रजित् सिंहकी आज्ञासे वहांके रेज़िडेंट और कमिश्नर मिस्टर केंटिनका पांच अंगरेज़ोंसहित बध हुआ । समाचार पातेही भारतकें वाइसराय लार्ड लैंसडाउनने लेफ्टिनेट ग्रेंटके अधिकारमें मनीपुरियोंका दमन करनेके लिये थोड़ी सी सेना भेजी ।

सेना पहुंचने पूर्वही रेज़िडेंट ग्रिमउड साहबकी मेम बड़े साहसके साथ मनी-पुरसे प्राण बचाकर भाग गई और सेनाने नाम मात्रकी लड़ाईके पश्चात् मनी-पुर लेलिया। सरकारने वहांके राजाको आजन्म कालापानी और सेनापतिको प्राणदंड दिया। और मनीपुरके वर्तमान राजाको जो गत राजाके कुटुंबियोंमें से थे गादी देकर वहां पर सरकारी एजेंसी नियत करदी। तबहीसे मनीपुरके वर्तमान नरेश अजमेरके मेओकालेजमें अंगरेज़ी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं॥

राजपूतानाके अंतर्गत झालावाड़के राजा महाराज राना जालिम सिंहजी बड़े सच्चे, दृढ और न्यायी थे। वहांकी प्रजा उनसे प्रसन्न रहती थी। परंतु उनका स्वभाव स्वतंत्र था। वह पोलिटिकेल एजेंटोंसे दबते न थे और प्रजाके साथ सच्चा न्याय करनेसे उनके कितनेही स्वार्थी कर्मचारी भी अप्रसन्न थे। महारा-नीकी सुवर्ण ज्यूबिलीके समय उत्सव न करने आदिका उनपर अपराध लगा-कर सरकारने उन्हें एकबार पदच्युत कर दिया था परंतु उनका ढंग सुधरता देखकर उन्हें फिरभी शासन करनेका अवसर दिया गया। दूसरी बारके शासनमें भी उन्होंने उसी नीतिका बर्त्ताव किया जिसका पहले किया था। इसका फल यह हुआकि झालावाड़के पोलिटिकेल एजेंट कर्नल गार्डनकी उनसे खटपट होगई। गार्डन साहबके कथनानुसार राजपूतानाके एजेंट गवर्नर जनरल मिस्टर क्रास्थवेट साहबने भारत वर्षके वाइसराय लार्ड एलगिनको उन्हें गादीसे उतार देनेकी सम्मति दी। कार्य इसीके अनुसार हुआ और झालावाड़की प्रजाकी इच्छाके विरुद्ध उसकी प्रार्थनाओंपर कुछ ध्यान न देकर सरकारने जालिमसिंहजीकी स्वल्प पेंशनकर उन्हें काशी भेजदिया। वह वहींपर शांति-पूर्वक अपने दिनकाट रहेहैं। झालावाड़ राज्यके दो हिस्सेकर सरकारने एक तृतीयांश राज्यका स्वामी कुँवर भवानी सिंहजीको जो अब वहांके महाराज रानाहैं करदिया और दो तृतीयांश कोटा राज्यमें मिला दिया। यह वही भाग था जो झालावाड़को कोटेसे मिलाथा। इस फैसलेसे सरकारकी कोटा राज्यपर उत्कृष्ट दया और सुनीतिका उदाहरण मिला। राजराना जालिम सिंहजीको गादीसे उतारकर पेन्शनदेनेकी घटना सन् ९६-९७ ई० की है॥

महारानीके शासनके अंतिम वर्षमें भरतपुरके महाराज श्रीरामसिंहजी गादीसे उतारे गये। उनका प्रबंध ठीक न देखकर सरकारने उनसे अधिकार तो पहलेही छीनरक्खा था परंतु विगत वर्ष आबू पहाड़पर उन्होंने विना अप-

राध अपने नौकरको गोलीसे मार डाला । बस इसी निमित्तको लेकर सरकारने उन्हें सदाके लिये भरतपुरकी गादीसे वंचित किया और उनके बालक पुत्रको राजा बनाया ॥

जिस समय भारत वर्षके वाइसराय लार्ड डफरिन थे काश्मीरके महाराज श्रीमान् प्रतापसिंहजी पर यह कलंक लगा था कि वह रूससे सीधा पत्र व्यवहार करतेहैं और राज्यका प्रबंध करने में अयोग्यहैं । इनदोनों बातोंका आश्रयलेकर सरकारने उनको भी उसी समय पदच्युत किया परंतु देशी समाचार पत्रों और परमपद प्राप्त मिस्टर ब्रेडलाके घोर प्रतिवाद करनेसे उनपरका कलंक दूर हुआ और वह सच्चे सिद्ध होकर सरकारने कौसिंलकी सहायतासे काश्मीरका शासन करनेकी उनको आज्ञादी और उससमयके वाइसराय लार्ड लैंसडाउनने स्वयं काश्मीर जाकर उनको संतुष्ट किया ॥

अध्याय ५८.

भारतवर्षकी पश्चिमोत्तर सीमाका युद्ध ।

अमीर अबदुल रहमानखांके काबुलका स्वामी बननेके अनंतर सरकारकी अफ़गानिस्तानके साथ कोई लड़ाई न हुई । यह राज्य इंग्लैंड और रूसके दो बलाढ्यराज्योंके बीचमें है इसलिये अमीर अपना कर्तव्य समझतेहैं कि दोनों राज्योंको प्रसन्न रखकर अपना मतलब सीधा करना चाहिये । इसी नीतिके अनुसार अमीर साहब चलकर अपनी स्वतंत्रताकी रक्षा कररहेहैं । और इसपर तुर्रा यह कि सरौतेके दोनों भागोंके बीचमें पड़करभी सुपारीरूपी काबुल अभी तक कटनेसे बचाहुआहै वह उनकी बुद्धि और गौरवका परिणामहै । सीमाप्रान्त पर बखेड़ा न होने देनेके लिये ब्रिटिश गवर्नमेंट उन्हें १२ लाखके बदले १८ लाख रुपये देनेलगीहै । केवल इतनाही नहीं बरन वह शनैः २ अपने राज्यमें शस्त्र और कपड़े आदिके कारखाने खोलकर काबुलकी बहुत कुछ उन्नति कररहे हैं । सन् ९४ ई० में ब्रिटिश गवर्नमेंटका काबुल राज्यसे अधिक मेल बढ़ानेकी इच्छासे अमीर इंग्लैंड बुलाये गये थे । उन्होंने सन् ९५ ई० के आरंभमें अपने छोटेपुत्र नसरुल्लाखांको भारत वर्ष होकर इंग्लैंडको भेजा वहाँ उनका बहुत सम्मान हुआ । महारानीने स्वयं उनसे मिलकर उनका सत्कार

किया । वह इंग्लैंड जाकर वहांके चाकचक्यसे बहुत चकित हुए परंतु इस बातसे काबुलकी राजनीतिमें किसी तरहका परिवर्त्तन न हुआ और सरकारका संबंध पूर्ववत् बना रहा ॥

सन् १८९५ ई० के अपरेलमें चित्रालमें लड़ाईकी गर्मागर्मी हुई । वहाँके राजा जो मेहतरके नामसे प्रसिद्धहैं दो भाई थे। भाई२आपसमें लड़मरे। एकको मारकर दूसरा गादीपर बैठा । इस घटनाको देखकर वहांपर अंगरेज़ी गवर्नमेंट की ओरसे जो रेज़िडेंट रहताथा घबराउठा । उसके प्राणकी रक्षाके लिये सरकार को सेना भेजनी पड़ी । नवीन मेहतरने अपने बहनोई उमराखांकी सहायतासे चित्रालके किलेमें रेज़िडेंट मिसर राबिन्सनको घेरलिया।रेजिडेंट साहब इने गिने सिक्खों सहित मेहतरकी सेनासे खूबलड़े। इस अवसरमें कर्नल केली सेना लेकर वहां जापहुंचे और थोडेही समय में मेजर जनरल सर राबर्ट लोन वहांजाकर मेहतर को परास्त किया । तबसे उमराखां मेहतर नियत हुआ और देशमें सब तरहकी शांति होगई ॥

इस युद्धको पूरे दो वर्षभी न होने पाये । इतनेही में सीमाप्रान्तमें फिर युद्ध की आग भड़क उठी । इस बारकी आग साधारण न थी । पश्चिमोत्तर सीमाकी प्रायः सबही जातियां अंगरेज़ोंके विरुद्धथीं । उन्हें गोरे चमड़ेसे धर्मद्वेष होगया। उस ओर रहनेवाले अंगरेज़ोंके प्राण जोखिममें आपड़े । परिणाम यह हुआ कि सरकारको चारोंओरसेना भेजनापड़ा। सेनापर सेना और लामपर लामलगनेसेभी अफरीदी चुपनहुए । उन्होंने सामने पड़कर कोईयुद्ध न किया परंतु तक२कर एक२ यूरोपियनको मारा । इस चढ़ाईमें अंगरेजोंकी इतनी सेना गई जितनी भारतवर्षके किसी युद्धमें इकट्ठी न हुईथी । सैनिकोंकी कुलसंख्या ८० हज़ारसे ऊपरथी । इसयुद्धमें अधिकभाग देशी रजवाड़ोंकी सेनाका था । श्रीमान् जोधपुर महाराज के चचा महाराज कर्नल सर प्रतापसिंहजी और श्रीमान् धौलपुरनरेश स्वयंगये और वहांपर वीरोचित कार्य किये । श्रीमान् जयपुर नरेश और श्रीमान् महाराज सेंधियाने रसद और बार बरदारीकी सेना देकर सहायताकी। अनेक अंगरेज़ोंके मारे जानेके अनन्तर सरकार का विजय हुआ । अफ़रीदियोंके गांव जला देने और उनको इसी तरह तंग करनेके अनन्तर शांति हुई। इस युद्धमें जनरल लाकहार्टका बहुत यश रहा । इस सेवासे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने उनको भारत वर्षका प्रधान सेनाध्यक्ष बनाया और सहायता करनेवाले देशी राजाओंको उपाधियां प्रदान कीं । इस युद्धम अमीर काबुलके लिये संदेह था कि, वह

शत्रुको सहायता देते हैं परंतु यह बात किसी तरह प्रमाणित न हुई । इस युद्धके अनंतर पश्चिमोत्तर सीमापर बिलकुल शांति हुई । उस ओरके रहनेवाले जंगली कट्टर मुसलमान यद्यपि अबतक लूट खसोट और मार काटसे उदासीन नहीं हुए हैं परंतु अब सरकारके साथ उनका कोई बखेड़ा नहीं है । यह गवर्नमेंटके प्रतापका कारण है । श्रीमतीके शासनके एक वर्ष पूर्व भारतवर्षके वाइसराय लार्ड कर्जनने गवर्नमेंटकी प्रचलित नीतिका कई अंशोंमें परिवर्त्तन कर सीमाप्रान्तकी प्रजाको सेनामें भरती करना आरंभ कर दिया । इसका यह फल हुआ कि जो पेट न भरनेसे लूट खसोट करतेथे वे शांत होगये । मेरी समझमें सीमाप्रान्तकी अशांति गवर्नमेंटके शरीरमें दादकी बीमारी है । दाद ही की तरह जब अवसर पाती है भड़क उठती है और जैसे दवा लगानेसे दाद दबतो जाता है परंतु मिटता नहीं है और चाहे जब उभर उठता है उसी तरह वह भी है परंतु लार्ड कर्जनकी दवाने अच्छा काम कर दिया । अब बुद्धिमानोंको आशा नहीं है कि फिर भी वहांपर उपद्रव खड़ा होगा॥

अध्याय ८९.

भारत वर्षमें प्लेग और अकाल।

श्रीमती महारानी विक्टोरियाकी हीरकज्यूबिलीके प्रथम वर्षमें बंबई नगर पर एक नवीन आपदा आई । ज्वर और गांठसे गोली की तरह चटाचट मनुष्य मरने लगे । आरंभमें कोई डाक्टर वैद्य और हकीम इस रोगका निदान न कर सका।डाक्टरोंकी सम्मतिसे गवर्नमेंटने प्रजाकी रक्षाके लिये जो प्रयत्न किया वह इस देशकी रीति और प्रजाके स्वभावके अनुकूल न हुआ। रोगीको पकड़कर अस्पताल में और घरवालों वा अडौसी पडौसी को कारंटाइनमें लेजानेकी प्रणालीने दहलका मचा दिया । ज्यों२ नगरमें लाशों पर लाशें गिरने लगीं त्यों ही त्यों लोगोंकी भागड़ मच गई । दूसरे वर्ष बंबईके जुलाहेंने मुरदेकी जांच और स्त्रियोंकी परीक्षासे अप्रसन्न होकर हुल्लड किया परंतु सेनाकी सहायतासे अधिक बखेड़ा न होने पाया । सरकारको जैसे२ प्रजाकी इच्छा और दुःखमालूम होतागया वह इसविषयके आईनको सरल करती गई । और कालके अतिक्रमणके साथ ही देशभरकी प्रजाने सरकारकी शुभेच्छा का आशय समझकर आज्ञा स्वीकारकी परंतु प्लेगने अभीतक शांति ग्रहण नकी। दिन २ भारतवर्षके सब भागमें फैलता जाताहै । मदरास, पंजाब और बिहारमें भी अब जापहुंचाहै।बंबई प्रान्तमें बंबई,पूना और करांचीको तो इसने अपना घरही

बनालियाहै । छःवर्षके आक्रमणने इसरोगसे भारतवर्षके कई लाख मनुष्यमर-चुके, अनेक घर ऊजड़ होगये और अनेक कुटुंबोंमें पानी देनेवाला तक नरहा। जिसको रोग होताहै उसके लिये यमराजने मानो बुलौवा भेजदियाहै । सैकड़े पीछे बीसमनुष्यसे अधिक नहीं बचतेहैं । डाक्टरहाफकिनने इसरोगके आक्रमणसे बचानेके लिये जो टींकेकी रीति निकालीहै उसका प्रचार दिन २ बढता जाताहै। अब किसीको प्लेग विषयके सरकारी नियमोंकी बिलकुल शिकायत नहीं है। अबभी जहां कहीं छोटा मोटा उपद्रव होताहै वहां प्रजाका अविचार और कर्मचारियोंका अत्याचारही कारणहै । सरकारने प्रजाकी भलाईके लिये प्लेगका प्रबंधकियाहै। डाक्टरोंके मतसे यह रोग संक्रामकहै और संक्रामक रोगोंमें रोगीको चंगे भलोंसे अलग रखना आवश्यकहै परंतु यह रीति भारतवर्षमें नईहै इसीलिये प्रजाने सरकारका तात्पर्य नसमझकर इसका आरंभमें विरोध कियाथा ॥

संवत् १९३४ ई० के अनन्तर भारतवर्षमें कोई भारी अकाल नहीं पड़ाथा। एकप्रकारसे प्रजा अकाल का दुःख भूलगईथी परंतु संवत् १९५४ (१८९७) ने फिर अकालकी याद दिलादी। बंबईप्रान्त, पश्चिमोत्तर प्रदेश और राजपूतानामें दारुणदुर्भिक्षने प्रजाको भयभीत करदिया। विलायतके लार्ड मेयरने कईवार सहायता देने का उस समयके वाइसराय लार्ड एलगिनसे अनुरोध किया परंतु वह आरंभमें इसको अधिक भयंकर नसमझकर कर्मचारियोंकी रिपोर्टोंके भरोसेरहे। इस शिथिलतामें बहुत मनुष्य भूखके मारे मरगये । परंतु जब उन्हें अकालका ठीक स्वरूप विदित होगया तब उन्होंने अच्छा प्रबंध किया । इस प्रबंधमें पश्चिमोत्तर प्रदेशके लेफ्टिनेंट गवर्नर सर ऐंटोनी मैकडानेलकी अधिक प्रशंसारही।अंतमें सरकारने कामसे तथा बिनापरिश्रम अन्नदेकर प्रजाके प्राण बचाये और अनेक देशहितैषियोंने मुक्तहस्तसे इसकार्यके लिये चन्दा दिया। विलायतमें भी चंदा होकर बहुतसा रुपया भारतवर्षमें आया और एमेरिकासे मकई प्रथमवार इसी वर्षमें आई ॥

इसके अनन्तर सन् १८९८ ई० का वर्ष सुकालका बीता किन्तु दूसरेही वर्ष सातों ग्रहोंने एक राशिपर इकट्ठे होकर भारतवर्षका नाशकरडाला।संवत्१९५६के अकालको वास्तवमें दुर्भिक्ष कहना चाहिये । इस अकालमें सरकार प्रजा और देशी राजाओंने प्रजाकी रक्षाके लिये जो काम खोले उनपर अधिकसे अधिक ६५ लाख मनुष्योंने भोजन पाया। इनमें जो लोग काम करने योग्य थे उन्होंने तालाब, सडक और रेलके कामोंमें मिट्टी खोदकर अपना पेट पालन किय

और जो इस कार्यमें अयोग्य थे उन्हें सेंतमें भोजन दिया गया। इस अकालके प्रबंधके लिये इस देशके वाइसराय लार्ड कर्जन पहलेसे तैयार होगयेथे। उन्होंने प्रजा रक्षाका अच्छा प्रबंध किया। और इसके लिये प्रजाने उनको और सरकारको अंतःकरणसे आशीर्वाद दिया। दोनों अकालों और प्लेगसे इस देशके कितने मनुष्य मरगये इसका कोई लेखा अभीतक प्रकाशित नहीं हुआ है परंतु इसका अनुमान मनुष्यगणनाकी रिपोर्टसे होता है जिनका सार इसी भागके अध्याय ३७ में है। बारंबारके अकालोंके पड़ने और प्लेगके कष्टसे प्रजा बिलकुल दरिद्री होगई थी और उसे ट्रांसवाल युद्धमें सरकारकी सहायता कर राज भक्तिका पूरा परिचयदेना था इस लिये अकालके कामोंमें भारतके नामधारी धनाढ्य अधिक द्रव्य न लगासके और विलायतकी प्रजा भी ट्रांसवाल युद्धमें लगी हुई थी इस लिये चन्देसे अधिक द्रव्य इकट्ठा न होसका परंतु फिरभी सरकार को बहुत कुछ सहायता मिलगई। इस अकालमें गवर्नमेंट और भारत की प्रजाके साथ सहानुभूति प्रकाशितकर जर्मनी, एमेरिका आदि देशोंने बहुत सहायताकी। इसमें एमेरिकाकी सहायता बहुत बढ़कर रही वहांकी प्रजाने अन्न वस्त्र और रुपया देनेमें बहुत कुछ श्रम किया और चाहे ईसाई मतका देशमें फैलानाही अभीष्ट हो परंतु पादरियोंने भी बहुतसे बालकोंके प्राण बचाये। यद्यपि इस अकालमें देशके अनेक धनाढ्य रुपया लगानेमें कुछ उदासीन रहे परंतु ऐसे लोगोंकी भी न्यूनता न रही जिन्होंने तन मन धनसे प्रजाकी रक्षा की॥

अकाल और प्लेगसे मनुष्योंके मरनेका अनुमान दो बारकी मनुष्य गणनासे हो सकता है परंतु इस अकालमें अकाल पीड़ित भागोंके कई लाख चौपाये नष्ट होगये इनमें अधिक संख्यातो भूखसे मरने वालोंहीकी है परंतु कसाइयोंकी छूरीसे भी कम न मरे। चौपायोंकी मृत्युसे चमड़ेका व्यापार खूब चमका और इस कार्यके करनेवालोंके वारे न्यारे होगये। और इसका फल यह हुआ कि मारवाड़ और गुजरातके किसानोंको बैलोंके अभावसे अपने हाथसे हल खैंचकर बैलोंका काम करना पड़ा॥

सरकारकी रक्षामें जिन ६५ लाख मनुष्योंके नित्य भोजन पानेकी इस अध्यायमें चर्चा है उसमें देशके भिखारियोंकी संख्या नहीं है। उस समय नगरोंमें वे लोग इतने बढ़ निकले थे कि मार्ग चलना कठिनथा। उनकी चिल्लाहट और दयाजनक स्थिति भले आदमियों के हृदयको विदीर्ण किये डालती थी। सरकारी राज्यमें भूखसे कितने मनुष्य मरगये इसका तो किसीने लेखा प्रकाशित न किया परंतु अकाल पीडित भागोंमें हैज़ेने हज़ारों मनुष्योंका स्वाहा करडाला।

सरकार और पादरियोंकी रिपोटोंसे इतना निश्चय अवश्य होता है कि कई एक रजवाडोंमें अकालसे प्रजा बहुत मरगई । इससमय लार्ड कर्जनने रुपया उधार देने, योग्य सम्मति देने और अनुभवी कर्मचारी देनेसे देशी रजवाड़ोंकी बहुत सहायता की परंतु फिरभी कई एक रजवाड़ों के प्रबंधकोंकी उपेक्षा और स्वार्थसे गाँवके गाँव ऊजड होगये ॥

अध्याय ९०.

पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवधमें हिन्दी ।

भारतवर्षके भिन्न २ प्रान्तों में जुदी २ प्रान्तीय भाषाओंको सरकारने बहुत कालसे न्यायालयोंमें स्थान दे रक्खा था परंतु इस देशकी राष्ट्रीय भाषा (हिंदी) की किसी जगह पूंछ गछ न थी । पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवधमें हिन्दीका मुख्यस्थान होनेपरभी इस लिपि में लिखी हुई अर्जियाँ वहां के न्यायालयों में नहीं ली जाती थीं । उन प्रान्तोंकी प्रजा बहुत कालसे सरकारसे इसविषयमें प्रार्थना करतीरही परंतु सर ऐंटोनी मैकडानल लेफ्टिनेंटगवर्नरसे पहले किसी शासकने उनकी गुहार पर ध्यान न दिया । हिन्दी हितैषिणी "नागरी प्रचारिणी सभा, काशी" के शान्तभावसे प्रयत्न करनेसे हिन्दीकी गुहार श्रीमान्के ध्यानमें आई । आपने १८ अप्रेल सन् १९००ई को एक आज्ञापत्र प्रकाशित कर उनप्रान्तों के न्यायालयों में हिन्दीका प्रवेश करदिया।इस आज्ञाके अनुसार प्रजाको अधिकार मिलगया कि, वह हिन्दी और उर्दू दोनों लिपियों में से जिसमें चाहे अर्जी, अर्जीदावा आदि कागज पेशकरसके और सम्मन वारंट आदि प्रजासे संबंध रखने वाले जितने कागजहैं वे सरकारकी ओरसे दोनों ही लिपियों में दिये जायाकरैं । बुद्धिमान् हिन्दू मुसलमानोंने इस आज्ञाको लोकोपकारी समझकर सरकारको धन्यवाद दिया, परंतु जो मुसलमान हठपूर्वक उर्दूका प्रचार रखना चाहतेथे उन्होंनें धर्मकी आड़लेकर इसे रोकनाचाहा । बात यहां तक बढ़ी कि, लखनऊमें मुसलमानोंकी एक महती सभा होकर वाइसरायसे निवेदन कियागया । उन्होंने इनकी अयुक्त प्रार्थना पर ध्यान न देकर लेफ्टिनेंट गवर्नरकी रायको बहाल रक्खा । और साथही सरकारी कर्मचारियोंको हिन्दीलिपिके साथ हिन्दी भाषा सीखनेकी उत्तेजनादी । इसका फल यह हुआ कि अब उन प्रान्तों में जो नवीन कर्मचारी भरती होताहै उसे दोनों भाषाओंकी परीक्षा देनी पड़तीहै ।

ऐसे नियम का प्रचार होगया । इस आज्ञाके अनुसार अब न्यायालयों में तो काम उर्दूमें होताहीहै क्योंकि यह उन प्रांतोकी राजभाषाहै परन्तु प्रजाकी ओरके यावत् कागज दोनोंमेंसे किसी लिपिमें लिये जाते हैं परन्तु हिन्दी पत्रोंकी भी भाषा उर्दू ही होती है । यह बात हिन्दी के इतिहास में सोनेके अक्षरों से लिखी जाने योग्य है ॥

इसके सिवाय पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवधके लेफ्टिनेंट गवर्नर सर ऐंटोंनी मैकडानेल ने हिन्दी भाषा की प्राचीन पुस्तकों की खोजके लिये उक्त सभाको प्रतिवर्ष आर्थिक सहायता देना आरंभ किया ॥

अध्याय ६१.

द्वितीयभागका परिशिष्ट ।

गतअध्यायों में श्रीमती महारानी के शासनकालकी मुख्य २ घटनाओं का उल्लेख किया गया है । इनके अतिरिक्त सन् १८८५ ई० से उनके शासन के अंततककी अनेक घटनायें ऐसी हैं जो समाचारपत्रों के पाठकों के चित्त से अभीतक हटी नहीं हैं । उनके विषयमें यहां विस्तार करनेकी आवश्यकता नहीं है । तथापि मैं जहांतक जानताहूं इस अध्याय में उनका यथाशक्ति दिग्दर्शनकर-देना इस भाग को पूर्ण करनेके लिये उचित है । इसी विचार से मैं थोड़ेसेमें उन्हें लिखकर इस भागको समाप्त करता हूं ॥

सन् १८८५ ई० से सन्१९०१ई. तककी मुख्य२घटनाओंमेंसे भारत षर्ष के संबंधकी जिन बातोंका उल्लेख गत अध्यायों में नहीं हुआ उनमें से आवश्यक ये हैं । एक काबुलके अमीर से संधिकर सीमाप्रान्त का निपटारा करना, दूसरी वाइसराय और प्रान्तीय गवर्नमेंटों वा लेफ्टिनेंट गवर्नरोंकी व्यवस्थापक सभाओं में प्रजाको मेंबर चुनने का स्वत्व प्रदान करना तीसरे उन मेंबरों को बजट और देशके प्रबंध संबंधी अन्य विषयोंपर सम्मति देने और वादानुवाद करनेका स्वत्व मिलना,चौथे देशकी राजभक्त प्रजामेंके कुछ भागपर अराजभक्तिका संदेह उत्पन्न होकर देशी समाचारपत्रोंकी स्वतंत्रता को सीमाबद्ध करना, पांचवें असंतोष फैलाने के संदेह में कईएक समाचार पत्रों के संपादकों को दंड मिलना और छठे देशके पोलिटिकल विषयों में सरकार से स्वत्व मांगने वाले नेशनल कांग्रेस की राजभक्ति और उत्तमताको स्वीकार कर उसके कथनपर सरकार का ध्यान आकर्षित होना इत्यादि इत्यादि ॥

इसके सिवाय जिन घटनाओं का श्रीमती के राज्यसे किसी न किसी प्रकार का संबंध है और भारतवर्ष में नहीं हुई हैं उनमें सौडानके खलीफा का राज्य नष्ट कर उसे मिसरके साथ मिलादेना, उस प्रदेशपर इंग्लैंड और फ्रांसका संयुक्त अधिकार, एफ्रिका के पश्चिम भाग पर फ्रांसके अधिकार को स्वीकार करना, चीन और जापान के युद्ध में चीन का हारकर परिणाम में जापानको फार्मोसा का टापू, रूसको लिया तुंगका द्वीप, बंदर आर्थर, जर्मनीको किआओ चाऊका बंदर इंग्लैंड को वी–हाई–वी का बंदर और काओलिनका भूभाग, फ्रांसको कांग चाऊ वानका बंदर और हेनान का टापू दे देना एमेरिका और स्पेन की लड़ाई, रूम और यूनान का युद्ध, जर्मनीका ईरानकी खाड़ीतक रेल बनाना, रूसका ईरानको रुपया उधार दिलवाना और उससे दूसरे राज्यों से ऋण न लेने का करार करवाना, चीनपर यूरोप और एमेरिका के समस्त राज्यों का मिलकर चढ़ाई करना· रूसका चीनसे मंचूरिया लेलेना और चीन में रेल्वे बनाने का स्वत्व प्राप्त करना तिब्बतके लामागुरुका रूससे मेल इत्यादि बातें इस जगह लिखे जाने योग्य हैं ॥

इति ।



दूसराभाग समाप्त ।

श्रीमतीके शासनमें ब्रिटिश साम्राज्यकी उन्नति।

तीसरा भाग।

अध्याय १.

राज्यवृद्धि।

मनुष्यसंख्या और व्यापार।

श्रीमतीके शासनके दीर्घकालमें ब्रिटिश राज्यका कायापलट होगया । जो राज्य छोटासा 'राज्य' कहलाता था और जिसकी गणना साधारण राज्यों में थी वह अब साम्राज्य है । अब वह यूरोपके पांच मुख्य राज्योंमें गिना जाता है । यद्यपि इस शासनमें देशान्तरोंमें शांति नहीं रही है किन्तु ग्रेट ब्रिटेनमें पुराने राज्योंकी तरह एकभी बखेड़ा नहीं बढ़ने पाया । इस कारण वहांकी मनुष्यगणनामें असाधारण वृद्धि हुई है। बाहर युद्ध और घरकी शांतिही राज्य वृद्धि का कारण है । बिना युद्धके पर राज्योंसे जय नहीं होसकता है और बिना विजय पाये राज्य नहीं बढ़ सकता है । इसीलिये किसी कविने कहा है—'असंतुष्टाद्विजानष्टा संतुष्टाश्चमहीपतेः" । इस वचनका पालन होना राजाओंको इष्ट होता है। यहां संतोष शब्दकी व्याख्या अप्रयोजनीय है । " हाथपर हाथ धरे बैठे रहकर प्रयत्न न करना " संतोष नहीं है किन्तु संतोष का अर्थ है—प्रयत्नके अन्तमें जो फल मिले उसपर प्रसन्न होना ॥

घरकी शांतिसे ब्रिटिश प्रजा बहुत बढ़गई। ग्रेट ब्रिटेनमें उसे रहने तकका स्थान नहींमिला तब लाचार होकर उसको बाहरका मार्ग लेना पड़ा। देश छोड़कर भारत वर्षमें कोई अंगरेज़ अपना घर नहीं बनाता है, यहां जो कोई रहता है वह केवल परदेशीबनकर रहताहै और रुपया कमाकर विलायत चलाजाताहै इसलिये भारत वर्षमें विक्टोरियाके शासनारम्भसे अब तकमें यूरोपियन लोगोंकी बस्ती बहुत बढ़नेपरभी वे घर छोड़ने वालोंकी गणनामें नहीं है किन्तु घर छोड़ने वाले वे हैं जो उपजीविकाके लिये केनाड़ा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और एफ्रिकामें जा बसे हैं। विक्टोरियाके राज्यमें हजारों लाखों क्या बरन करोड़ों अंगरेज़ोंके अनेक

उपनिवेशोंको अपना निवासस्थान बनानेपरभी ग्रेट ब्रिटेनकी मनुष्य गणना बहुत बढ़ीहै । श्रीमतीके शासनारम्भके तीनही वर्षबाद अर्थात् सन् १८४१ई० में इन देशोंकी जिनको अंगरेज़ लोग मातृभूमि (Mother Country) कहतेहैं मनुष्यगणना १ करोड ८६ लाख ५६ हजार ४१४ थी किन्तु पचास वर्ष बाद सन् १८९१ ई० में वही संख्या ३ करोड़ ७८ लाख ८० हजार ७६४ को पहुँची । यह संख्या श्रीमतीके शासन समाप्तिके दश वर्ष पूर्वकी है । अंतिम दश वर्षभी बहुत कुछ शांतिपूर्वक व्यतीत हुए हैं यदि इस समयका लेखा उपलब्ध होसकै तो उसकी संख्या पाठकों को अधिक चकित करैगी । यद्यपि यह नहीं बतलाया जासकताहै कि ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैंडके कितने मनुष्य श्रीमतीके शासनके ६३ वर्षोंमें विदेश जाकर बसेहैं परंतु इसमें संदेह नहीं है कि उनकी संख्या एक करोड़से किसी अंशमें कम नहीं है ॥

महारानीके शासन में ब्रिटिश राज्यकी असाधारण उन्नति हुई । यद्यपि भारत वर्षपर ब्रिटिश जाति का आधिपत्य पहलेही से स्थापित होचुका था परन्तु कंपनी से इसका अधिकार लेकर इसी समयमें भारत वर्ष ब्रिटिश राज्यमें जोड़ागया। सन् १८५९ई० के युद्ध में रेडसीका मार्ग और अदन सरकार के हाथ आया । सन् ४२ मे हांग कांगका टापू और सन् ६० ई० में उसके दूसरे ओर कारीवानका प्रायः द्वीप सरकारको मिला।हांगकांग आजकल दुनिया भरके बंदरोंमें सर्वोत्तम मानाजाता है। श्रीमतीके जहाज ठहरने के लिये बंदर हैमिल्टन है जहां से यलोसी जापानके समुद्र और कोरिया जाने आने का मार्ग है । एफ्रिकामें श्रीमती का राज्य बहुत कुछ बढ़ा है। मटाबलीलैंड, मशोनालैंड, बेचुआनालैंड, पोंडोलैंड, यूगंडा और जंजीबारके निकट किलियांजरो ब्रिटिश राज्य का एक भाग है । भारतवर्ष में जो २ भाग बढ़ाये गयेहैं उनका वर्णन अन्यत्र हुआहै । केनाडा भी इन्हींके समय में ब्रिटिश राज्य में मिलायागया । और इसी तरह अनेक छोटे मोटे टापुओं पर ब्रिटिश झंडा इन्हीके शासन में फहराया । एक विद्वानने गणनाकर निश्चय किया है कि श्रीमती के राज्य में १० हजार टापू ५०० अंतरीप और २००० नदियां हैं । इनका राज्य यूरोप में ३, एशिया में १० से अधिक, एफ्रिका में १९ से अधिक, आस्ट्रेलिया में ६०से ऊपर और एमेरिकामें २५से ऊपर प्रति सैकड़ा वर्गमीलपर है । १०० वर्ष पूर्व ब्रिटिशराज्य का क्षेत्रफल ग्रेटब्रिटेन से १६ गुना अधिक था किन्तु अब ९६ गुना अधिक है । इस राज्य का विस्तार पहले २ करोड़ मीलथा अब बढ़कर १२ करो मील होगया । ॥